सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

नवम्बर, 2020 | वर्ष 19 | अंक 09

रब का वली

जो रब से महब्बत करता है
रब का वली वह होता है
जो नबी से उल्फ़त रखता है
रब का वली वह होता है
भले काम वह करता है
बुरे काम से बचता है
काम वह जो भी करता है
रब की रिज़ा को करता है
नबी पे रहमत और सलाम
कसरत से जो पढ़ता है
बेशक ऐसा बन्दा तो
रब का वली वह होता है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	06
दीने इस्लाम क़बूल करने	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	07
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	10
खिलाफते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	13
सामाजिक बुराइयां और	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	16
इस्लाम और अक़ीद–ए–ख़त्मे	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	19
खुलास–ए–ईमान व इस्लाम	मौलाना शमसुलहक़ नदवी	23
अपना माहौल अपनी जन्नत (पद्य)	मतीन अचल पुरी	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
कुछ कोरोना के विषय पर	इदारा	26
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	27
सन चालीस के इक उस्ताद (पद्य)	इदारा	30
एक मौलवी साहब	माइल खैराबादी	32
सफाई–सुथराई	मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	38
नींद	इदारा	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुआन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

अपने पालनहार के संदेश तुम को पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा विश्वसनीय शुभचिन्तक हूँ(68) क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की नसीहत (उपदेश) तुम्हीं में से एक व्यक्ति के द्वारा पहुँची ताकि वह तुम्हें डराए और याद करो जब तुम्हें नूह की कौम के बाद उसने सरदारी प्रदान की और तुम्हारे डील–डौल में भी बढ़ोतरी की तो अल्लाह के इनआमों को याद करो शायद तुम सफल हो जाओ(69) वे बोले क्या तुम हमारे पास इसीलिए आए हो कि हम एक अल्लाह की इबादत करने लगें और जिनकी इबादत हमारे बाप–दादा करते चले आ रहे हैं उनको छोड़ दें बस अगर तुम सच्चे हो तो जिन चीज़ों से तुम हमको डराते हो वह ला कर दिखा दो(70) कहा कि तुम अपने पालनहार की ओर से अज़ाब और गुस्से के हकदार हो चुके, क्या तुम मुझसे उन नामों के बारे में बहस करते हो जो तुमने खुद रख लिए या तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए, अल्लाह ने उसकी कोई दलील नहीं उतारी तो तुम भी प्रतीक्षा करो[1] मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हूँ(71) फिर हमने उनको और उनके साथ वालों को अपनी रहमत (कृपा) से बचा लिया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनकी जड़ काट कर रख दी और वे मानने वाले न थे[2](72) और ''समूद'' की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बंदगी करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं, तुम्हारे पालनहार की ओर से खुली दलील आ चुकी[3], यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है तो तुम इसे छोड़ दो यह अल्लाह की ज़मीन में खाये पिये और इसे किसी बुराई के इरादे से छूना भी नहीं तकलीफ़ न पहुँचाना वरना तुम दुखद अज़ाब का शिकार हो जाओगे(73) और याद करो जब उसने आद के बाद तुम्हें सरदारी प्रदान की और ज़मीन में तुम्हें बसाया, तुम उसके बराबर क्षेत्रों में महल बनाते हो और पहाड़ों के मकान तराशते हो तो अल्लाह के उपकारों को याद करो और ज़मीन में बिगाड़ मचाते मत फिरो(74) क़ौम के सम्मानित लोगों ने जो घमण्ड में पड़े थे उन्होंने कमज़ोरों में ईमान लाने वालों से कहा कि तुम्हें क्या पता कि सालेह को उनके पालनहार की ओर से भेजा गया है, वे कहने लगे कि हम तो जिस चीज़ को वह लाये हैं उस पर विश्वास रखते हैं(75) वह घमण्डी लोग बोले कि सालेह

शेष पृष्ठ .....09....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

एक मर्दे मोमिन की दृढ़ता और ईमानी ताक़तः-

हज़रत अबू सईद खुदरी रह0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया जब दज्जाल निकलेगा तो अल्लाह का एक मोमिन बन्दा उसकी ओर जायेगा, पहले दज्जाल के पहरेदारों से भिड़ंत होगी, वह कहेंगे कहां जाने का इरादा है, क्या तुम मेरे रब्बुल आलमीन पर ईमान नहीं लाये? मोमिन कहेगा मेरे परवरदिगार की सिफतों में कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है अर्थात! (उसके रब होने की सारी दलीलें सूरज की तरह रौशन हैं) तो वह कहेंगे इसको क़त्ल कर दो, फिर एक दूसरे से कहेगा क्या तुम्हारे रब ने तुम को हुक्म नहीं दिया कि मेरी बिना इजाज़त किसी को क़त्ल न करना? तो वह लोग उसको दज्जाल के पास ले जायेंगे, जब वह मर्दे मोमिन उसको देखेगा तो कहेगा ऐ लोगो! यह वही दज्जाल है जिस का ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया था फिर दज्जाल उन लोगों को आदेश देगा कि इसको ज़मीन पर चित लिटा दो या पेट के बल लिटा दो, तो वह लिटा दिया जायेगा, फिर दज्जाल आदेश देगा कि इसको पकड़ कर इसका सर तोड़ दो, वह उसकी पीठ और पेट को बुरी तरह से चोट पहुंचायेंगे, फिर दज्जाल कहेगा कि क्या तुम मुझ पर ईमान न लाओगे? मोमिन कहेगा तू मसीह दज्जाल है, फिर दज्जाल आदेश देगा कि इस को चीर कर दो टुकड़े कर दो फिर आरे से उसको चीरते हुए दो टुकड़े कर देंगे और दज्ज़ाल दोनों टुकड़ों के बीच में (घमण्ड करता हुआ) चलेगा और उस से कहेगा उठ, वह मर्दे मोमिन सीधा उठ खड़ा होगा, दज्जाल कहेगा अब भी तुम मुझ पर ईमान नहीं लाये, वह कहेगा अब तो मुझ को और भी यक़ीन हो गया कि तू झूठा है, फिर वह मर्दे मोमिन अपने लोगों से मुखातब हो कर कहेगा, ऐ लोगो! याद रखो जो कुछ इसने मेरे साथ मुआ़मला किया है किसी के साथ न कर सकेगा, फिर दज्जाल उस को ज़ब्ह करने के ख़याल से पकड़ लेगा, लेकिन अल्लाह तआला उसकी गर्दन और हंसली को तांबा बना देगा (अर्थातः तांबे की तरह सख़्त ताकि कोई चीज़ असर न करे) फिर वह लाख ज़ब्ह करना चाहेगा लेकिन बिल्कुल भी असर न होगा, तब दज्जाल उसके हाथ पांव पकड़ कर उसको फेंक देगा, लोग देखेंगे कि वह आग में फेंका गया है, लेकिन सही मानों में वह जन्नत में होगा, फिर हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह के नज़दीक सब से बड़ी गवाही उसी की होगी, या अल्लाह तआ़ला के सामने दज्जाल के झूठे होने की गवाही देने में वह सब से आगे आगे होगा। (मुस्लिम)

शेष पृष्ठ ....37....पर

दीने इस्लाम क़बूल करने में कोई ज़ोर व ज़बरदस्ती नहीं है

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हाँ पवित्र कुर्आन में आया है कि दीने इस्लाम क़बूल करने में कोई ज़ोर व ज़बरदस्ती नहीं है परन्तु साथ ही ये भी बताया गया कि अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा भ्रष्टता से सत्यमार्ग (हिदायत) स्पष्ट हो चुका है अतः जो शैतानों तथा मिथ्या उपास्यों को नकार कर एक अल्लाह पर ईमान ले आया उसने मदद के लिए एक बड़ा मज़बूत हल्क़ा (कड़ा) पकड़ लिया जो कभी टूटेगा नहीं अर्थात वह (अल्लाह) के संरक्षण में आ गया ईश्वर ईमान वालों का संरक्षक है मित्र है वह ईमान वालों को असत्य की अन्धेरियों से निकाल कर सत्य के प्रकाश में लाता है तथा जिन लोगों ने सत्य को नकार दिया उनके संरक्षक उनके मित्र शयातीन और मिथ्या उपास्य है वह उनको सत्य के प्रकाश से निकाल कर असत्य की अन्धेरियों में लाते हैं ऐसे ही लोग आग यानि जहन्नम वाले हैं वह उसमें सदैव रहेंगे।

(अल बक़रः 256.257)

अल्लाह तआ़ला ने प्यारे नबी को आदेश दिया कि आप लोगों से कह दीजिए ये जो इस्लाम मैं लाया हूँ यह अल्लाह की ओर से है जिसका मन चाहे इसको माने जिसका मन न चाहे नकार दे।

निः सन्देह हमने अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है जो आग की क़नातों से घिरी है अत्याचारी उसी में डाले जाएंगे वह पानी माँगेंगे तो ऐसा गर्म पानी दिया जायेगा जो मुँह को झुलसा दे क्या ही बुरा पानी है और अत्याचारियों का क्या ही बुरा ठिकाना है सबसे बड़ा अत्याचारी वह है जो अल्लाह का साझी ठहराये।

शिर्क अल्लाह का साझी ठहराना कितना बुरा है इसको बड़ी सरलता से यूं समझ सकते हैं, आजकल देश में भाजपा सरकार है मोदी महोदय प्रधान मंत्री हैं ऐसे में अगर कोई कहे कि राहुल जी जिस को चाहें सरकारी नौकरी दे सकते हैं जिसको चाहें जहां का राज्यपाल बना सकते हैं वह अगर आदेश दें तो सेना पाकिस्तान पर या चीन पर आक्रमण कर सकती है ऐसे व्यक्ति के विषय में भाजपा सरकार क्या निर्णय लेगी बस इससे ईशवर (अल्लाह) के साथ साझी ठहराने के पाप को समझा जा सकता है। अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि जो लोग ईमान लाए और भले काम किये हम उनके भले कामों का बदला व्यर्थ नहीं करते, उनके लिए जन्नत में ऊँचा स्थान है जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी उन्हें वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और हरे सुनदुस और इसतबरक के रेशमी वस्त्र पहनाए

जाएंगे वह मसेहरियों पर बैठे होंगे कितना अच्छा बदला है भले काम का और कितना अच्छा ठिकाना है ईमान वालों का।

पवित्र कुर्आन ने ईमान लाने वालों और ईमान न लाने वालों का परिणाम स्पष्ट कर दिया और कह दिया कि इस्लाम अल्लाह की ओर से आया हुआ सत्य धर्म है मनुष्य को अधिकार है चाहे इसको माने चाहे नकार दे, इस्लाम स्वीकार करने के लिए ज़ोर व ज़बरदस्ती नहीं है।

मक्के के वह सरदार जो अभी तक अपने बाप दादा के दीन पर थे मूर्ति पूजक थे वह दूसरे मुनकिरों और मुनाफिक़ों और मुश्रिकों की भाँति क़ियामत हश्र हिसाब व किताब सदैव की जन्नत या सदैव की जहन्नम पर विश्वास नहीं रखते थे वह मूर्ति पूजा पर जमे हुए थे उन्होंने देखा कि इस्लाम बढ़ता जा रहा है उनको खतरा हुआ कि ऐसा न हो हमारा भी दीन–धर्म ख़त्म हो जाए और इस्लाम छा जाए तो क्यों न हम मुहम्मद से समझौता कर लें उन्होंने प्यारे नबी से कहा ऐ मुहम्मद हम तुम दीन के विषय में समझौता कर लें हम लोग एक साल तुम्हारे माबूद की उपासना करें दूसरे साल तुम हमारे माबूदों की उपासना करो। अल्लाह ने प्यारे नबी को आदेश दिया कि आप इन लोगों से कह दीजिए कि ऐ सत्यधर्म इस्लाम के मुनकिरों तुम जिनको पूजते हो मैं उनको नहीं पूज सकता, और जिसकी इबादत मैं करता हूँ तुम उसकी इबादत करने वाले नहीं हो सकते और तुम जिसकी इबादत करते हो मैं उसकी इबादत करने वाला नहीं हो सकता और मैं जिसकी इबादत करता हूं तुम उसकी इबादत करने वाले नहीं हो सकते अर्थात तुम मुझको बुतों की इबादत के लिए दावत देते हो और एक साल तक उनकी इबादत की दावत देते हो मैं तो एक साल क्या एक पल के लिए भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी ग़ैरुल्लाह की उपासना सोच भी नहीं सकता मेरे लिए ग़ैरुल्लाह की इबादत मुहाल ही नहीं असम्भव है रही तुम्हारी बात जो तुम एक ईश्वर (अल्लाह) की इबादत के लिए तैयार हो मगर तुम्हारे मन में कि इसके पश्चात मैं फिर बुतों की इबादत करूँगा ऐसे में तुम्हारे एकेश्वर (अल्लाह) की उपासना शुद्ध ही न होगी इसीलिए कहा कि जिस की इबादत मैं करता हूँ उस की इबादत करने वाले तुम हो ही नहीं सकते जब परिस्थिति यह है तो तुम्हारा शिर्क वाला दीन तुम्हारे लिए है दीने इस्लाम मेरे लिए। यह बयान सूरे काफिरून के अध्ययन के पश्चात लिखा गया इसमें जो समझौता का कारण लिखा गया है वह मेरा कियासी है हो सकता है वह न हो।

अब कुछ कोरोना के विषय में:–

कोरोना ने इस्लामी आमाल को बहुत प्रभावित किया इस्लाम के दो भाग हैं अक़ीदा और अ़मल, अक़ीदे में तो किसी हाल में कोई कमी बेशी हो नहीं सकती अलबत्ता आमाल में आवश्यकतानुसार

सम्भव छूट को अपनाया जा सकता है, रुख़्सत पर अमल किया जा सकता है हज, ईदैन की नमाज़ें, जुमे की नमाज़ में मौजूदा सूरत जो इख़्तियार की गयी है वह इसी नियम के अन्तर्गत है अल्लाह तआ़ला कोरोना को दुन्या से जल्द से जल्द उठा ले और दुन्या वालों को राहत मिले।

आमीन!

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

तुम जिससे डराते रहे हो अगर तुम पैग़म्बर हो तो उसे लो आओ(77) बस भूकंप ने उन्हें आ दबोचा तो वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गए(78) फिर (हज़रत सालेह) उनसे पलटे और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपने पालनहार का पैग़ाम तुम को पहुंचा दिया और तुम्हारा भला चाहा लेकिन तुम्हें तो भला चाहने वाले पसंद ही नहीं थे[4] (79) और लूत को (भेजा), जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा तुम ऐसी अश्लीलता करते हो जो दुन्या जहान में तुम से पहले किसी ने न की(80) तुम कामेच्छा पूरी करने के लिए औरतों के बजाय मर्दों के पास जाते हो बात यह है कि तुम तो हद से गुज़र जाने वाले लोग हो[5] (81)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. उन्होंने बहुत से ख़ुदा बना रखे थे और उनके विभिन्न नाम रखे थे, कोई वर्षा का, कोई संतान का, कोई रोज़ी का, इसी तरह शिर्क के दलदल में फंसे हुए थे।

2. आद हज़रत नूह के पोते इरम की संतान में थे यह ''यमन'' में बसे हुए थे, अल्लाह ने इन्हें असाधारण डील डोल और ताक़त दी थी, जिस पर इन को गर्व था, हज़रत हूद इन्हीं की क़ौम के सदस्य थे लेकिन इन्होंने उनकी बात न मानी और उन पर सात रात और आठ दिन लगातार अज़ाब आया जिससे वे छिन्न भिन्न कर दिये गए।

3. समूद ने हज़रत सालेह से कहा था कि आप पत्थर की चट्टान से एक गर्भवती ऊँटनी निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएंगे जब वह निशानी आ गई तो हज़रत सालेह ने कहा कि अब तो ईमान ले आओ और यह ऊँटनी अल्लाह की निशानी है इसको छेड़ना मत वरना अज़ाब का शिकार हो जाओगे।

4. समूद को आद सानी (दूसरे आद) भी कहा जाता है यह भी बड़े डील डौल के थे और पहाड़ों को काट कर मकान बनाते थे इन्होंने ऊँटनी की मांग की थी अल्लाह की आज्ञा से हज़रत सालेह ने पहाड़ से वह ऊँटनी निकाल दी, कहा जाता है कि वह इतने महान काया की थी कि जिस जंगल में चरती जानवर डर कर भाग जाते और जिस कुँएं में पानी पीती उसे खाली कर देती अंततः लोग उसको क़त्ल कर डालने पर सहमत हो गए और एक अभागे ने उसे मार डाला फिर उन पर अज़ाब आया हज़रत हूद और हज़रत सालेह दोनों हज़रत इब्राहीम से पहले हुए।

5. हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे उनके साथ ही उन्होंने इराक़ से शाम प्रवास (हिज़रत) की और सदूम और उसके आस पास की बस्तियों में पैग़म्बर बना कर भेजे गए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नबूवत (दूतकर्म)का असल कारनामा

कुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क :–

आख़िरत के इन्कार के प्रभावः–

आख़िरत के इन्कार का पहला स्वाभाविक प्रभाव यह है कि संसारिक जीवन और दुन्या की चीज़ों से स्वाद और लाभ का एक जुनून पैदा हो जाता है और यही जीवन का लक्ष्य करार पाता है जो सोसाइटी यह अक़ीदा रखती है वह 'खाओ पियो मस्त रहो' में भूली रहती है। और इसी में मुक़ाबला होता रहता है। वास्तव में आख़िरत के इन्कार के बाद यह जुनून सर्वथा बुद्धिमता है, जो इस जीवन के बाद किसी दूसरे जीवन की कल्पना से खाली हो, वह इस जीवन का आनन्द लेने और दिल की आग बुझाने में क्यों कमी करें। और भोग विलास को किस दिन के लिए उठा रखें। इसी लिए कुर्आन कहता हैः–

अनुवादः– *और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे आख़िरत से निश्चिन्त हो कर फायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है और उनका ठिकाना आग (नर्क) है।*

(सूरः मुहम्मद –12)

अनुवादः– *तुम अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें दुन्या की ज़िन्दगी में ले चुके और उनसे खूब फायदा भी उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमानित करने वाला अज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि तुम ज़मीन में बिना किसी हक के घमण्ड करते थे।*

(सूरः अल् अह्क़ाफ–20)

आख़िरत के इन्कार का स्वाभाविक नतीजा है कि यह दुन्या, इसकी चीज़ें, इसमें काम आने वाले कर्म अधिक लुभावने बन जाते हैं। निगाह भौतिकवादी और ओछी हो जाती है जो वास्तविकताओं तक नहीं पहुंच सकतीः–

अनुवादः– *जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके काम उनके लिए खुशनुमा (सुन्दर) बना दिये हैं तो वे परेशान (सत्य मार्ग से) भटकते फिरते हैं।*

(सूरः अं–नम्ल 4)

अनुवादः– *कह दीजिए, "क्या हम तुम्हें उनकी ख़बर दें, जो अपने अमल की दृष्टि से सबसे बढ़ कर घाटा उठाने वाले हैं? यह वह लोग हैं, "जिनकी पूरी कोशिश दुन्या ही की ज़िन्दगी में बरबाद हो कर रही, और वह यही समझते रहे कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। यही वे लोग हैं, जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसके सामने हाजिर होने को न माना तो उनके काम भी किसी काम न आये। फिर क़यामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही दोज़ख है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र (इन्कार) किया, और 'हमारी आयतों, और हमारे रसूलों की हँसी उड़ाई। जो लोग ईमान लाए, और भले काम*

किये उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं। जिनमें वे हमेशा रहेंगे वहाँ से और कहीं न जाना चाहेंगे।''

(सूरः अल–कहफ़ 103–108)

इसका एक नतीजा यह भी होता है कि जीवन में हक़ीक़त और संजीदगी (गम्भीरता) का हिस्सा कम और लहव–लइब (वह खेल–कूद और बात जो धार्मिक कामों से रोके) का हिस्सा ज़ियादा होता है। उनके जीवन के एक बड़े हिस्से को तफरीह और मौज मस्ती की व्यस्ततायें घेरे रहती हैं और बड़े–बड़े गंभीर समय और खतरों में भी उनके इस तफरीही कामों में कोई अंतर नहीं आता। कुर्आन कहता हैः–

अनुवादः– *और आप उन लोगों को उनके हाल पर छोड़ दीजिए जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है, और दुन्या की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है।*

(सूरः अल्–अनआम 70)

इसका एक नतीजा यह भी है कि घटना चक्र के वास्तविक कारण पर उनकी नज़र नहीं पड़ती, बल्कि कुछ ज़ाहिरी चीज़ों में उलझ कर रह जाती है, वह मामलात की गहराई तक नहीं उतर सकते जिसका नतीजा यह होता है कि ठीक बरबादी के समय भी उनकी तफरीही व्यस्तता और गफलत कम नहीं होती। वह इन घटनाओं की कोई तावील (किसी बात का ऐसा फल बताना जो करीब–करीब ठीक जान पड़े) कर लेते हैं और उनकी कोई फर्जी और ग़ैर हक़ीकी वजह तलाश करके संतुष्ट हो जाते हैं। और उनके रवैये में कोई बड़ी तब्दीली नहीं आती। निम्न आयत साक्षी हैः–

अनुवादः– *जब हमारी ओर से उन पर अज़ाब (दण्ड) आया तो फिर क्यों न गिड़गिड़ाए तथा क्यों न रोए व हमसे सम्पर्क साधा? लेकिन बात यह है कि उनके दिल तो कठोर हो गये हैं और जो कुछ वे करते थे, शैतान ने उसे उनके लिए मुज़य्यन (मनमोहक) बना दिया था।*

(सूरः अल्–अनआम 43)

आख़िरत के इन्कार का एक नैतिक नतीजा यह होता है कि नैतिक क्रियाओं का कोई उत्प्रेरक बाक़ी नहीं रहता और उन अख़लाक़ व आमाल (नैतिकता व अच्छे कार्य) की कोई आमादगी पैदा नहीं होती जिनमें कोई दुन्यावी फायदा नज़र नहीं आता, या उनके करने के लिए इन्सान मज़बूर नहीं होता।

अनुवादः– *क्या आपने उस व्यक्ति को देखा जो बदला व दण्ड़ को झुठलाता है? यह वही है जो यतीम को धक्के देता है और मिस्कीन मुहताज को खिलाने की तर्गीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।*

(सूरः अल–माऊन 1–3)

और अगर वह ऐसे कोई कार्य करते भी हैं तो दिखावे के लिए–

अनुवादः– *और जो लोगों को दिखाने के लिए अपने माल ख़र्च करते है। और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते न आख़िरत के दिन पर, जिस किसी का साथी शैतान हो, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।*

(सूरः अं–निसा 38)

अनुवादः– *उस व्यक्ति की तरह (बर्बाद न कर दो) जो लोगों को दिखाने के लिए*

अपना माल ख़र्च करता, अल्लाह और आख़िरत पर ईमान नहीं रखता।

(सूरः अल–बकरह 264)

आखिरत के इन्कार की एक विशेषता यह है कि आदमी घमण्डी हो जाता है, जो अपने से ऊपर किसी हाकिम या ताकत और सर्वगुण सम्पन्न मालिक की अदालत और इस ज़िन्दगी के बाद किसी ज़िन्दगी और बदले के दिन का यक़ीन नहीं रखता। उसको एक बे नकेल ऊँट और एक सरकश इन्सान बनने से क्या चीज़ रोक सकती है। दुन्यावी क़ानून और मसलहत व अवरोध किसी हद तक उसके रास्ते में रुकावट बनेंगे, लेकिन यह अवरोध जब दूर हो जायेंगे या इन पर जहां वह हावी हो सकेगा तो वहां वह फिरऔन बन कर भी प्रकट होगा। कुर्आन में आख़िरत के इनकार के साथ इसीलिए अक्सर तकब्बुर (घमण्ड) का ज़िक्र किया गया है।

अनुवादः— *तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं और वे अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं।*

(सूरः अ–नहल 22)

फिरऔन और उसके लश्कर के बारे में कहा गयाः—

अनुवादः— *और वह और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक घमण्ड किया, और समझा कि उन्हें हमारी ओर लौटना ही नहीं है।*

(सूरः अल–कसस 36)

हज़रत मूसा अलै0 के उस कथन में जो कुर्आन में किया गया है, इस किस्से की तरफ़ इशारा किया गया हैः—

अनुवादः— *और मूसा ने कहा, मैं हर घमण्डी के मुकाबले में जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूँ।''*

(सूरः अल–मूमिन 27)

आख़िरत का इन्कार करने वाला सामान्यतः इस दुन्या में भी एक आध्यात्मिक अजाब और मनोवैज्ञानिक उलझन से ग्रसित रहता है। इनमें जिन लोगों की आत्मा मर नहीं गई है, उनको यह खटक हर हाल में तकलीफ देती रहती है कि जीवन बहरहाल सीमित है, उम्र कितनी ही लम्बी हो, भोग विलास का सामान कितना ही अधिक हो, मौत यक़ीनी है और इस आनन्द भवन से एक दिन ज़रूर ही निकलना पड़ेगा और इस भोग विलास को अनिवार्यतः छोड़ना पड़ेगा। दिल की यह फांस और आँखों की यह खटक उनके ऐश को किरकिरा कर देती है और उन्हें बेचैन रखती है। दुन्या में वह बड़े निराश होते हैं और हक़ीक़त में उनसे बढ़ कर कौन निराश हो सकता हैः—

मुनहसिर मरने पे हो जिसकी उम्मीद,
ना उम्मीदी उसकी देखा चाहिए।

इसलिए इनमें से बहुत से लोग अपने दिल को मौत के ख़्याल से बचाते रहते हैं, और इसका ख्याल किसी तरह आने नहीं देते। मौत के नाम से वह घबराते हैं, और कुछ इस का इन्तेज़ाम करते हैं कि उनको किसी तरह भी यह नागवार हक़ीक़त याद न आये इसलिए वह लोग नशे का इस्तेमाल करते हैं ताकि उन पर हमेशा बेखुदी छायी रहे—

मय से गरज़ निशात है किस रू सियाह को
एक गूनः बेखुदी मुझे दिन-रात चाहिए

फिर इनकी यह हालत होती है कि सारी उम्र उनको यह कड़ुवा यथार्थ कभी नहीं

शेष पृष्ठ ....15....पर

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना गुलाम रसूल मेहर —प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहू

हज़रत अली रज़ि0 इराक़ के सफ़र परः–

जब हज़रत अली रज़ि0 ने सुना कि हज़रत आइशा रज़ि0 इराक़ जा रही हैं तो वह भी इस बात पर मजबूर हो गये कि शाम के विवाद को मुलतवी (स्थगित) करके इराक़ का रुख़ करें लोगों ने मशवरा दिया कि मदीना न छोड़िये लेकिन हज़रत अली रज़ि0 ने फरमाया कि अगर इराक़ पर विरोधियों का अधिकार हो गया तो बहुत दुशवारी पेश आयेगी, लिहाज़ा वह रवाना हो गये, हज़रत अली रज़ि0 इराक़ पहुंच गये, तो दोनों पक्षों पर वास्तविक हालात स्पष्ट हो गये, और संधि की बात शुरु हुई, दोनों पक्षों के नेक नियत आदमियों की ख़्वाहिश यही थी कि सुलह हो जाये लेकिन जिनकी नियत में खोट था वह चाहते थे कि संधि न होने दें और जिन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ि0 के विरुद्ध उपद्रव किया था उनकी ख़ैर इसी में थी कि झगड़ा चलता रहे क्योंकि संधि होते ही वे पकड़े जाते।

जंगे जमलः–

संधि की बातचीत पक्की हो गई और मुआमला तै हो गया था, कि शरीरों ने हज़रत आइशा रज़ि0 के साथियों पर अचानक रात में हमला कर दिया उधर समझा गया कि 'संधि' तोड़ कर लड़ाई शुरु कर दी गई, इस प्रकार वह जंग शुरु हुई जो जंगे जमल कहलाई।

इसे यह नाम इसलिए मिला कि हज़रत आइशा रज़ि0 एक ऊँट पर लोहे के हौदे पर सवार थीं और यही ऊँट हज़रत आइशा रज़ियल्लहु अन्हा की ओर के आदमियों का निशाने जंग था, उसकी हिमायत में सैकड़ों आदमियों ने बेदरेग़ (निःसंकोच) जानें कुरबान कर दीं, हज़रत दरदा और हज़रत जुबैर रज़ि0 भी हज़रत आइशा रज़ि0 की ओर से शरीक़ थे, हज़रत जुबैर रज़ि0 को वास्तविक हाल मालूम हुआ, तो वह जंग से अलग हो गये।

इसी प्रकार हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने आपको जंग से अलग कर लिया, दुशमनों ने दोनों को शहीद कर दिया, हज़रत आइशा रज़ि0 को हज़रत अली रज़ि0 बसरा में ले गये थोड़े दिन वहाँ रहीं, फिर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गईं, हज़रत अली रज़ि0 ख़ुद चन्द मील तक साथ गये, उसके बाद ''कूफ़ा'' ख़िलाफ़ते इस्लामी का मरकज़ बन गया।

जंगे सिफ़्फ़ीनः–

इधर झगड़ा ख़त्म हो गया, उधर अमीर मुआविया रज़ि0 बदस्तूर (निरंतर) हज़रत उस्मान रज़ि0 के ख़ून के दावेदार बने रहे,

बीच बचाव की कोशिश कामयाब न हो सकी, आख़िर सिफ़्फ़ीन के मुक़ाम पर हज़रत अली रज़ि0 और अमीर मुआविया रज़ि0 में जंग हुई, अमीर मुअ़विया रज़ि0 ने दरिया के घाट पर क़बजा कर लिया था ताकि हज़रत अली रज़ि0 की फ़ौज को पानी न मिल सके, लेकिन जब घाट हज़रत अली रज़ि0 के कबज़े में आ गया तो उन्होंने शामी फ़ौज को पानी लेने की इजाज़त दे दी, इस मौके पर फिर नेक दिल असहाब तीन महीने तक संधि की कोशिशें करते रहे, आख़िर लड़ाई हुई जब हज़रत अली रज़ि0 की सफलता में कोई सन्देह न रहा तो सामने वाली फ़ौज ने कुर्आन मजीद नेज़ों पर बांध लिये, इससे उनका संकेत था कि हम कुरआन पाक के आधार पर निर्णय के लिए तैयार हैं।

हज़रत अली रज़ि0 फरमाते रहे कि यह केवल एक चाल है लेकिन कई गरोह बोल उठे कि अगर कुर्आन पाक बीच में ले आने के बाद भी जंग न रोकी गई तो हम लोग अलग हो जायेंगे।

मध्यस्थताः-

ग़रज़ जंग रुक गई और बातचीत शुरु हो गई, निर्णय हुआ कि हज़रत अली रज़ि0 और अमीर मुआविया रज़ि0 की ओर से एक एक सालिस (मध्यस्थ) नियुक्त हो जाये, उनके फ़ैसले को दोनों दल मान लें। हज़रत अली रज़ि0 की ओर से अबू मूसा अशअरी रज़ि0 और हज़रत मुआविया रज़ि0 की ओर से हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0, अबू मूसा अशअरी रज़ि0 हज़रत अली रज़ि0 की फ़ज़ीलतों के मानने वाले थे और अमीर मुआविया रज़ि0 को खिलाफ़त के लिए उचित नहीं समझते थे लेकिन झगड़े को मिटाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कहा कि हज़रत अली रज़ि0 और अमीर मुआविया रज़ि0 दोनों को अलग करके अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 को ख़लीफ़ा बना लेना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए नये सिरे से मजलिसे शूरा (परामर्शदाता समिति) बैठे।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने कहा कि पहले आप इस फैसले का एलान करें हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 ने कहा हमने अली रज़ि0 और मुआविया रज़ि0 दोनों को मअ़जूल (पदच्युत) किया, मजलिसे शूरा नये सिरे से बैठे, यह एलान हो चुका तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 बोले मैं भी अली रज़ि0 को मअ़जूल करता हूं और मुआविया रज़ि0 को इस मन्सद पर क़ायम रखता हूँ। अबू मूसा अशअरी रज़ि0 इस बदअहदी पर इतना अप्रसन्न हुए कि पूरी ज़िन्दगी तनहाई में गुज़ार दी।

मूल सिद्धान्त का उल्लंघनः-

यहाँ यह हक़ीक़त सामने रखनी चाहिए कि जंग सिफ़्फ़ीन के सिलसिले में बुन्यादी मसअला हज़रत अली और अमीर मुआविया रज़ि0 की खिलाफ़त का न था, क्योंकि हज़रत अली ख़लीफ़ा बन चुके थे और हज़रत अमीर मुआविया

रज़ि0 उसके उम्मीद वार भी नहीं थे, उनकी ओर से तो केवल हज़रत उस्मान रज़ि0. के ख़ून का मुतालबा पेश हो रहा था। अलबत्ता वह इस मसअले के फ़ैसले से पहले हज़रत अली रज़ि0 को ख़लीफ़ा मानने के लिए तैयार न थे, मगर यह ख़िलाफ़त की उम्मीदवारी न थी, आश्चर्य है कि अम्र बिन आस रज़ि0 ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 की सादगी और सुलह पसन्दी से फ़ाइदा उठा कर मसअले को कुछ का कुछ बना दिया और जो कुछ हुआ वह मध्यस्थता के सिद्धान्त) का ख़ुला उल्लन्घन था, यही वजह है कि हज़रत अली रज़ि0 ने यह फैसला मानने से इन्कार कर दिया और इस इन्कार में वह बिल्कुल हक़ पर थे।

ख़वारिज (अलग होने वाले):-

इस सालिसी को क़बूल कर लेने पर हज़रत अली रज़ि0 के साथियों में से एक बड़ी जमाअत अलग हो गई, उन्होंने दावा किया कि फ़ैसले का हक सिर्फ़ ख़ुदा को है, और सालिसी पर राज़ी हो जाने की निन्दा शुरु कर दी, यह ख़ारिजी थे उन्होंने अपनी एक अलग जमाअत बना ली, उनका अक़ीदा यह था कि ख़िलाफ़त एक दीनी मआमला है, दीनी मुआमलात में ख़ुदा के अलावा किसी और को बीच में डालना कुफ्र है, इन सालिसों (मध्यस्थों) को नियुक्त करने वाले मआज़ अल्लाह काफ़िर हैं जो व्यक्ति इस अक़ीदे का विरोध करे वह गरदन ज़दनी (वध योग्य) है। यह लोग तलवार के ज़ोर से अपना अक़ीदा फैलाने लगे, और क़त्ल का बाज़ार गरम कर दिया, ख़ारजियों का मरकज़ "नहरवान" था। हज़रत अली रज़ि0 को उन्हें सजा देनी पड़ी पहले आदमी भेज कर समझाने की कोशिश की, इसका नतीजा कुछ न निकला तो फ़ौज ले कर बढ़े ख़ारजी बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन हार गये इस जंग को जंगे नहरवान कहते हैं।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी.....

याद आता और उनका यह आलम होता है–

सदा ख़्वाबे ग़फ़लत में मदहोश रहना,
दमे मर्ग तक ख़ुद फ़रामोश रहना।

उनकी आँखें उस समय खुलती हैं जब वह हमेशा के लिए बन्द होने लगती हैं–

अनुवादः– *वे लोग बड़े घाटे में हैं जो अल्लाह के सामने पेशी को झूठ बताते व समझते हैं। यहाँ तक कि जब अचानक उन पर क़यामत आ जाएगी, तो वे कहेंगे "हाय! अफ़सोस, उन कोताहियों पर जो इस क़यामत की तैयारी में हमसे हुई" और हाल यह होगा कि अपने पापों के बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे, देखो! सावधान! बहुत बुरे वह बोझ होंगे जिनको वह उठाए हुए होंगे। बुरा बोझ है जो यह उठाए हुए हैं।*

(सूरः अल–अनआम 31)

अनुवाद–*और यह दुन्या की ज़िन्दगी तो केवल खेल–तमाशा है, और आख़िरत का घर ही अस्ल ज़िन्दगी है, क्या ही अच्छा होता कि लोग इस वास्तविकता को जान लेते?*

(सूरः अल–अन्कबूत 64)

❖❖❖

सामाजिक बुराइयां और उनका हल

—हज़रत मौलाना सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

सामाजिक बुराइयाँ नाम है अ़क्ल व इरादे की कमी का, जब इंसान में अक्ल व इरादा कमज़ोर पड़ जाता है तो वह बुराई की ओर आकर्षित होता है जिस से समाज तबाह होता है और व्यक्तियों और समूहों को अध्यात्मिक एवं आर्थिक नुक़सान पहुँचता है बल्कि यह बुराइयाँ जब किसी क़ौम में आम हो जाती हैं तो क़ौम व मुल्क की तबाही व बर्बादी का सबब बनती हैं।

इस्लाम एक मुकम्मल जीवन विधान है। इसलिए कुर्आन ने जगह जगह सामाजिक बुराइयों का बड़े विस्तार से ज़िक्र किया है और साथ ही उसके सुधार का तरीक़ा भी बताया है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है:—

अनुवाद— *बेशक अल्लाह इंसाफ़ और एहसान के काम करने और रिशतेदारों के साथ भलाई का सुलूक करने का आदेश देता है और अशलीलता से और अशिष्ट काम से और उदण्डता से रोकता है, वह तुम्हें नसीहत करता है कि शायद तुम ध्यान दो। सूरः नहल—20)*

इस आयते करीमा में सामाजिक बुराइयों को तीन बड़े शीर्षकों में बाँटा गया है जो यह हैं—

1. फहशा (बेहयाई)
2. मुंकरात जिससे पूरे समाज की ज़िन्दगी प्रभावित होती है जैसे चोरी, क़त्ल, डाका और मुल्क व क़ौम में गड़बड़ी के कार्य ।

यह काम वह नैतिक बुराइयाँ हैं जिसको हर धर्म और हर समाज ने सामान्य रूप से बुरा कहा है, वे ऐसी बुराइयाँ और बेहयाइयाँ हैं जो सब की निगाहों में बुरी हैं और जिनका करना गुनाह और अशोभनीय है मगर उनको जायज़ ठहरा दिया जाये तो लोगों के आपसी अधिकारों की सुरक्षा समाप्त हो जाय और किसी की भी जान माल इज़्ज़त व आबरू सुरक्षित न रहे।

कुर्आन मजीद ने इस संदर्भ में नैतिकता का संतुलित निजाम पेश किया, वे अख़्लाक़ जो खुदा को पसंद हैं अच्छे अख़्लाक़ कहलाते हैं और जिनको खुदा ना पसंद करता है उनको बुरे अख़्लाक़ कहते हैं, कुर्आन मजीद ने जिन अच्छे अख़्लाक़ का ज़िक्र किया है वह यह हैं:—

तक़्वाः—

तक़्वा नाम है पाक—दामनी और पाकीज़गी का, न्याय व इंसाफ का, माफ करने का, हक़ और सच बात कहने का, एहसान और रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक करने का, एक दूसरे के आदर व सम्मान तथा नर्मी व महब्बत का बर्ताव करने का, इन अच्छी आदतों और अख़्लाक़ के न होने से जो सामाजिक बुराइयाँ पैदा होती हैं वह यह हैं:—

लालच, बेहयाई व बेशर्मी, बेजा और नामुनासिब खर्च,

झूठ, रिश्वत जुआ व सट्टे बाज़ी, नाप–तौल में कमी ज़्यादती, पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई, यह वे सामाजिक बुराइयाँ हैं जिन को कुर्आन ने ''फहशा'' और ''मुन्करात'' कहा है, कुर्आन मजीद ने इन सामाजिक बुराइयों का जो इलाज बयान किया है वह यह है कि!

अनुवादः *बेशक नमाज़ बेहयाई और बुराई की बातों से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी चीज़ है।*

शर्म व हया (लज्जा):-

बेहयाई का इलाज शर्म व हया है, बे हयाई की बातों से बचना लेकिन हक़ को सामने लाने में शर्म व हया आड़े न आने पाये, यही सामाजिक बुराइयों का कुर्आनी इलाज है लज्जा नाम है फ़वाहिश व मुन्करात से बचने का, लज्जा ही इंसानों को सामाजिक बुराइयों से रोकती है अगर यह न हो तो फिर इंसान बेहया हो कर जो चाहे कर सकता है, लज्जा से भलाई फैलती है नमाज़ इंसानों में लज्जा पैदा करती है और वही बुराइयों से बचाती है।

न्यायः-

इसी प्रकार ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में न्याय से काम लेने की भी ज़रूरत है जब अक़्ल की ताक़त और नेकी का चिराग, भावनाओं की आंधियों में बुझ रहा हो तो उस समय न्याय का सहारा लेना पड़ता है, कुछ बुराइयाँ वे हैं जिन के करने से ख़ुदा की रहमत छिन जाती है और उनके बाद वे बुराइयाँ हैं जो ख़ुदा की महब्बत से वंचित कर देती हैं फिर वह हैं जो अल्लाह की खुशी व रज़ा से ख़ाली हैं जैसे शिर्क, यह ऐसी सामाजिक खराबी है कि जिसमें लिप्त इंसान अल्लाह की रिज़ा व खुशी को नहीं पा सकता, बल्कि खुदा शिर्क को माफ़ नहीं करता, शिर्क करने वाला खुदा की रहमत से हमेशा के लिए महरूम हो जाता है, इसलिए इस्लाम की विशेषता यह है कि उसने दुन्या के इबादत खानों से सारे झूठे पूज्यों को बाहर निकाल फेंका, झूठे पूज्यों की इबादत पर बिल्कुल रोक लगा दी, और एक ख़ुदा की इबादत का एलान कर दिया।

दरगुज़र (क्षमा):-

कुर्आन मजीद ने दूसरा इलाज जो सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए बताया है वह यह है–

अनुवादः– *और अच्छाई और बुराई दोनों बराबर नहीं हैं (बुरी बात का) जवाब ऐसा दो जो बहुत अच्छा हो तो देखोगे कि जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी थी अब मानो वह घनिष्ट मित्र हैं।(सूरः हामीम सज्दा–34)*

मालूम हुआ कि बुराई और भलाई बराबर नहीं, अगर कोई बुराई करे तो उसका जवाब अच्छाई से दो, क्योंकि नादान लोगों को माफ़ करना और एहसान करना नेकी है, अल्लाह अच्छाई के बदले को बरबाद नहीं करता, हर नेकी सवाब का काम है, एहसान करने और न्याय व्यवस्था से बुराइयाँ दूर होती हैं, इसलिए माफ़ करने से काम लेना चाहिए, बुराई की जगह भलाई

करना सामाजिक ख़राबियों का सब से बड़ा इलाज है इसीलिए कुर्आन मजीद ने कहा है।

अनुवादः— *बेशक नेकियाँ बुराई को दूर कर देती हैं।*

(सूरः हूदः114)

नेकियों को चलन में लाने और ज़िन्दगी को अच्छे कामों से सजाने की मिसाल कुर्आन मजीद ने सूरः फुरक़ान में ''रहमान केबन्दों'' के नाम से इस तरह दी है।

अनुवादः— *और खुदा के खास बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर दबे पाँव चलते हैं और जब नादान लोग उनके मुँह लगते हैं तो वे साहब सलामत कर लेते हैं, और जो अपने पालनहार के लिए सज्दे कर के और खड़े रह–रह कर रातें बिता देते हैं, और जो यह दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! दोज़ख के अजाब को हमसे फेर दीजिए बेशक उसका अ़ज़ाब बड़ी सज़ा है, बेशक वह बहुत ही बुरा ठिकाना है और बहुत बुरा रहने का स्थान है, और जो खर्च करते हैं तो न फ़ुजूल खर्ची करते हैं, और न तंगी और वे संतुलन पर कायम रहते हैं, और अल्लाह के साथ और किसी पूज्य को नहीं पुकारते और किसी ऐसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम कर दिया हो क़त्ल नहीं करते सिवाय हक़ के और ज़िना (व्यभिचार) नहीं करते और जो ऐसा करेगा वह बड़े पाप में जा पड़ेगा।*

(सूरः अल फ़ुरक़ान 63–68)

इसके अलावा सामाजिक खराबियाँ जिन चीज़ों से दूर हो सकती हैं कुर्आन मजीद ने उनकी तफ़्सील बताई है। और वे ये हैंः–

(1) तक़्वा। (2) इख़्लास (3) तवक्कुल (4) सब्र व शुक्र तक़्वा नाम है दिल की पवित्रता और सत्य निष्ठा (नेक अमल) का।

इख़्लास नाम है दयानतदारी (सत्य निष्ठा) का, तवक़्कुल खुदा पर भरोसा करने को कहते हैं और सब्र तमाम शैतानी ताक़तों पर क़ाबू पाने को कहते हैं तक़्वा से बुलन्दी पैदा होती है और इन्सान का ज़मीर सजग हो जाता है इसीलिए इस्लाम में श्रेष्ठता का मानक तक़्वा को क़रार दिया गया है, इख़्लास खुदा की खुशी और आदेशों को पूरा करने को कहते हैं, ज़ाहिर है अगर इन्सान में परहेज़गारी और ज़िनदगी से खुलूस (निष्ठा) पैदा हो जाये तो पूरा समाज सामाजिक बुराइयों से पाक हो सकता है क्योंकि जिस में अल्लाह का ड़र होगा वह न बेईमानी करेगा और न किसी का हक़ मारेगा न उसकी कथनी करनी में फ़र्क़ होगा और न वह अपने कर्तव्यों से मुँह मोड़ेगा इसी तरह तवक्कुल और सब्र कामयाबी के मूल साधन हैं कठिनाईयों और मुसीबतों का सहन करना, मुसीबतों का बहादुरी से मुक़ाबला करना किसी क़ौम और मुल्क की तरक़्क़ी का ज़ीना हैं।

❖❖❖

इस्लाम और अक़ीद-ए-ख़त्मे नबूवत

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

अक़ीद—ए—ख़त्मे नबूवत एक अज़ीम, वाज़ेह और रौशन हक़ीक़त है। इस का इंकार करना और ख़ातिमुन्नबीयीन अलै0 को सिल्सिल—ए—नबूवत को मुकम्मल करने और उनके बाद किसी नबी या रसूल के मबऊस न होने का एतेराफ़ न करना इस्लाम के रास्ते से खुला हुआ इंहिराफ़ है और उसकी कोई तावील व तफ़्सीर किसी हाल में दीने इस्लाम को मंजूर नहीं है, वाक़िआ यह है कि सन् 1857 ई0 की बगावत में जो अंग्रेज़ों के ख़िलाफ थी, इस्लामियाने हिन्द की नाकामी के बाद अंग्रेज़ों ने सब से पहले उलमा—ए—इस्लाम पर धावा बोला और उन को क़ैद व बन्द की मुसीबत में मुब्तला किया, उनको यक़ीन था कि उनके खिलाफ़ बगावत की क़यादत मुसलमान आलिमों ही ने की, लिहाज़ा सब से पहले उनको उखाड़ देने और उन का वजूद मिटा देने की कोशिश में तीस हज़ार से ले कर पचास हज़ार तक उलमा को तख़्त—ए—दार पर चढ़ाने के बजाए निहायत बे दर्दी से उन का क़त्ले आम किया और दिल्ली से ले कर यूपी और पंजाब के शहरों में उलमा को दरख़्तों की शाखों पर लटका कर क़त्ल करने का अमल पूरा किया, उन का ख़याल था कि बगावत तमाम तर उन्हीं उलमा की साज़िश का नतीजा थी, चूंकि अंग्रेज़ भी दीने मसीह की तरफ़ निस्बत करने की वजह से अल्लाह को मानते थे, ख़्वाह उन के मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में अक़ीद—ए—तस्लीस के मानने वाले भी एक बड़ी तादाद में मौजूद थे, इसलिए उन को मुसलमानों के ख़िलाफ इन्तिक़ामी जज़्बे के मातहत अक़ीद—ए—खत्मे नबूवत को मिटा देने का अमल ज़ियादा आसान मालूम हुआ। वह अपनी ज़िहानत व अय्यारी से उस बात पर यक़ीन रखते थे कि अक़ीद—ए—खत्मे नबूवत पर हमला करना और उसके बारे में कम से कम शक का अमल जारी रखना मुसलमानों के खिलाफ एक ज़बरदस्त हथियार है, और उसके ज़रीआ हम उम्मते मुस्लिमा को सिराते मुस्तक़ीम से हटा कर उन के ईमान को मुतज़लज़ल कर सकते हैं, और उनको एक कमज़ोर और आजिज़ व बे बस उम्मत की शक़्ल में जिन्दा रहने की इजाज़त दे सकते हैं।

इस मक़सद को हासिल करने के लिए उन्होंने मुसलमानों के गिरोह से ऐसे लोगों को ख़रीदने का अमल शुरु किया, जो अक़्ली और ईमानी हैसियत से इन्तिहाई कमज़ोर थे, चन्द सिक्कों के बदले बिकने के लिए नीलामी की मण्डी में अपने आप को पेश करने में कोई शर्म नहीं महसूस करते थे, वह उम्मते मुस्लिमा में एक ऐसा फ़िर्क़ा तैयार करने की कोशिशों में इन्तिहाई संजीदगी के साथ मसरूफ़ हुए, जो ख़त्मे नबूवत के अक़ीदा से दस्तबरदार हो कर नबूवत का सिलसिला

जारी रहने का क़ाइल हो, उनको इस गिरोह की क़ियादत के लिए एक ऐसे शख़्स की ज़रूरत थी जो उस ''फरीज़ा'' को बखूबी अंजाम देने की सलाहियत रखता हो, वह इस तलाश में थे कि अचानक उनकी नज़रों ने एक बावजाहत शख़्स को दरयाफ़्त कर लिया जो उनके जाल में गिरफ़्तार हो कर उस अकीदे से दस्तबरदार होने के लिए न सिर्फ यह कि तैयार हो गये बल्कि ख़ुद ही नबूवत का दावा कर बैठे, उन का नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद था। वह सियालकोट शहर में अंग्रेज के डिप्टी कमिश्नर की कचेहरी में कम तनख़्वाह पर मुलाज़िम थे, उसकी वजह से वह अंग्रेज़ हुक्काम के माहौल में मुतआ़रफ़ हो गये थे, अंग्रेज़ अपनी दूरबीं निगाहों से यह समझ गये कि जिस शिकार की उन को तलाश है, वह मिर्ज़ा गुलाम अहमद के अन्दर मौजूद है, चुनांचि उन से मुख़्तलिफ तरीक़ों से यह बावर कराने की कोशिश की गई कि वह दर अस्ल उम्मते मुस्लिमा के आख़िरी पैग़म्बर हैं और उनके पास आसमान से ''वही'' आती है। उसके मुताबिक़ वह अपनी सरगर्मियों को जारी रखते हैं और उम्मत को उसी की तल्क़ीन करते हैं।

अब मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मुद्दई नबूवत हो गए, और अंग्रेज़ के मुक़र्रर करदा तनख़्वाहदार नबी बन गए और नबूवत का दावा कर बैठे, और एक तालीम याफ़्ता तबक़े को अपना मोतक़िद और मानने वाला बना लिया और उस तबक़े के ज़रीये से क़ादियान का यह नया मज़हब और अक़ीदा हिन्दुस्तान के गोशा गोशा में मारूफ व मशहूर हो गया, अंग्रेज़ों ने उसकी ज़बरदस्त पुश्त पनाही की और मुसलमानों को अक़ीद–ए–ख़त्मे नबूवत का अस्ल नबी गुलाम अहमद क़ादियानी को बताया और कुर्आने करीम की एक आयत में जहाँ हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ''अहमद'' के लफ़्ज़ से याद किया गया है, उस को अपने ऊपर फिट करने की कोशिश में अंग्रेजों से साज़ बाज़ कर के उम्मत को यह बावर कराने की भरपूर कोशिश की कि ''अहमद'' से मुराद मिर्जा गुलाम अहमद है, यह साज़िश इस क़दर ठोस और पुर असरार थी कि बहुत से लोगों का धोखा खा जाना कुछ ज़ियादा मुश्किल न था और अंग्रेज़ों की सर परस्ती और हुक्मरानी में क़ौम मुस्लिम के गुमराह हो जाने का ख़तरा भी कुछ कम न था, लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस साज़िश को नाकाम बना दिया और हर क़िस्म के लाव लश्कर और माल व दौलत के अम्बार ने कुछ काम न दिया।

मिर्ज़ा साहब की मुख़ालफ़त करने वालों में मिनजुमला और बहुत से उलमा–ए–इस्लाम के मशहूर आलिमे दीन मौलाना सना उल्लाह अमृतसरी पेश पेश थे, और मिर्ज़ा की मुख़ालफ़त का झण्डा अपने हाथ में ले कर उनके इस झूठ का पर्दा फाशा करने का ऐलान करते थे, बेहतर मालूम होता है कि

इस मौक़े पर हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह0 की किताब ''क़ादियानीयत तहलील व तज्ज़िया'' से एक इक़्तिबास नक़्ल कर दिया जाए, उसका उनवान है ''वफ़ात'' यानी मिर्ज़ा गुलाम अहमद का इन्तिक़ाल।

''मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब ने जब सन् 1891 ई0 में मसीह मौऊद होने का दावा किया, फिर 1901 ई0 में नबूवत का दावा किया तो उलमाए इस्लाम में उनकी तरदीद व मुखालफ़त करने वालों में मशहूर आलिम मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी नाजिम ''अहले हदीस'' पेश पेश और नुमायाँ थे, मिर्ज़ा साहब ने 5 अप्रैल 1907 ई0 में एक इश्तिहार जारी किया जिसमें मौलाना को मुख़ातब करते हुए तहरीर फरमाया ''अगर मैं ऐसा ही कज्ज़ाब व मुफतरी हूँ जैसा कि अक्सर औक़ात आप अपने हर एक पर्चा में मुझे याद करते हैं तो मैं आप की ज़िन्दगी में ही हलाक हो जाऊँगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि मुफ़सिद और कज़्ज़ाब की बहुत उम्र नहीं होती और आख़िर वह ज़िल्लत व हसरत के साथ अपने दुश्मनों की ज़िन्दगी में ही नाकाम व हलाक़ हो जाता है, और उस का हलाक होना ही बेहतर होता है, ताकि खुदा के बन्दों को तबाह व बरबाद न करे।

और अगर मैं कज़्जाब व मुफतरी नहीं हूँ और ख़ुदा के मुकालमा व मुखातबा से मुशर्रफ हूं और मसीह मौऊद हूं तो मैं खुदा के फ़ज़्ल से उम्मीद रखता हूं कि सुन्नत के मुवाफिक़ आप मुकज़्ज़िबीन की सज़ा से नहीं बचेंगे, पस अगर वह सज़ा जो इन्सान के हाथों से नहीं बल्कि ख़ुदा के हाथों से है यानी ताऊन हैज़ा वगैरा मुहलिक बीमारियाँ आप पर मेरी ज़िन्दगी में वारिद न हुईं, तो खुदा की तरफ़ से नहीं।

इस इश्तिहार के एक साल के बाद 25 मई 1908 ई0 को मिर्ज़ा साहब ब मुकाम लाहौर बादे इशा इस हाल में मुब्तला हुए, इस हाल के साथ इस्तफराग भी था। रात ही को इलाज की तदबीर की गई लेकिन कमज़ोरी बढ़ती गयी, और हालत दिगरगूँ होती गई, बिल आखिर 26 मई मंगल को दिन चढ़े आप ने इन्तिक़ाल किया।''
(क़ादियानीयतः तहलील व तज्ज़ियाः 25–26)

और मौलाना अमृतसरी इस वाक़िआ के बाद चालीस साल तक जिन्दा सलामत रहे, बिला शुब्हा''।

तन्हा यही वाक़िआ इस बात के सबूत के लिए काफी है कि कादियानी मज़हब के अलमबरदार मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने अपने ही फैसले से अपने बातिल को साबित कर दिया और कादियानीयत के रास्ते को हमेशा के लिए बन्द कर दिया, मगर बुरा हो बातिल के उन अलमबरदारों का जिन्होंने महज इस्लाम को नुक़्सान पहुँचाने और मुसलमानों को ज़लील करने के लिए एक फर्ज़ी दास्तान गढ़ी और उसकी ''सदाक़त'' को लोगों के सामने लाने के लिए उन्होंने मिर्ज़ा गुलाम अहमद और उनके हमनवाओं को तैयार किया, उनको यक़ीन था कि वह न सिर्फ हिन्दुस्तान में बल्कि पूरी दुन्या में उस बातिल दावे को

फैला कर ख़त्म नबूवत के अक़ीदे को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला की रस्सी इतनी मज़बूत है कि वह सारे आलम की बातिल ताक़तों को इकट्ठा कर के उसको तोड़ना चाहें तो वह खुद टूट जाऐंगे, और अल्लाह की रस्सी उसी तरह मज़बूती के साथ काइम रहेगी और खत्म नबूवत का रौशन चिराग अपनी पूरी आब व ताब के साथ जलता रहेगा और न सिर्फ अहले ईमान के दिलों को मुनव्वर करता रहेगा बल्कि वह पूरी दुन्या के कोने कोने को रौशन करता रहेगा, और उस रौशन चिराग को बुझाने वाले अपनी साज़िशों का शिकार होते रहेंगे, अल्लाह तआ़ला ने फरमाया।

ऐ नबी! ''यक़ीनन हम ने ही आप को (रसूल बना कर), गवाही देने वाला, खुशख़बरी सुनाने वाला, आगाह करने वाला बना कर भेजा है, और अल्लाह के हुक्म से उस की तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग''।

और फरमाया ''लोगो! तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं, लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और तमाम नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को बखूबी जानने वाला है।

(सूरः अलअहज़ाबः 40–45)

उन दुश्मनाने इस्लाम की सिर्फ एक मिसाल आप के सामने पेश करने की इजाज़त चाहूँगा, वह यह कि उन्होंने इस्लाम को नाक़ाबिले इत्तिबा साबित करने के लिए कुर्आन करीम में सूरः आल इमरान की एक आयत में, कुर्आन की तबाअ़त करने वाले किसी इदारे के पुरुफ रीडरों से साज़िश करके निहायत ख़फीफ तहरीफ करा दी, ताकि वह आम लोगों की नज़रों से पोशीदा रहे।

इसमें ''गैर'' लफ़्ज़ साकित करा दिया और अब आयत का मफहूम अपने हक़ीक़ी मफहूम के बर अक्स हो गया, यानी अल्लाह तबारक तआला इस्लाम को बतौरे दीन के कुबूल नहीं करेगा, जब कि उससे पहले उसका मतलब था कि इस्लाम के अलावा जो शख़्स किसी दीन का ख़्वाहाँ होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको क़बूल नहीं करेंगे।

इस एक मिसाल से दीन के अनदर शकूक व शुबहात पैदा करने की मुनज्जम और मुसलसल मेहनत व कोशिश से कोई किस तरह इन्कार कर सकता है।

दूसरी मिसाल कुर्आन करीम की आयत सूर–ए–इसरा में क़रीब है तुम्हारा रब तुम पर रहम फ़रमाये मज़हब ईसाई में हज़रत ईसा अलै0 को रब मानने वाले उन्हीं मुहर्रफीन ने इसा को ईसा बना दिया और तुम्हारा रब ईसा करके हज़रत ईसा अलै0 की रबूबियत साबित करने की नाकाम कोशिश की।

अक़ीदए ख़त्म नबूवत के बारे में तश्कीली सिलसिला बराबर जारी है, और उसको ख़त्म करने के लिए मुसलसल और मुख़्लिसाना जद्दो जहद की ज़रूरत उम्मत के हर फर्द पर लागू होती है।

❖❖❖

ख़ुलासा–ए–ईमान व इस्लाम

–मौलाना शमसुलहक़ नदवी

–हिन्दी लिपिः सना ख़ान

यह दुन्या कोई खरपतवार का जंगल नहीं बल्कि यह उस माली का लगाया हुआ सुन्दर बाग़ है जिसने पूरी दुन्या को वजूद बख़शा। इन्सान उस बाग़ का क़ीमती सरमाया है, बे मक़सद नहीं कि जो चाहे उसे तहस नहस कर डाले। इन्सान के मानवता के सार का उसके ख़ालिक़ के अलावा कोई क़ीमत नहीं लगा सकता, उसके अन्दर वह लामहदूद (असीमित इच्छा) वह हिम्मत, वह बुलन्द परवाज़ रूह और वह बेचैन दिल है जिस को पूरी दुन्या मिल कर भी सुकून नहीं दे सकती, इसलिए गैर फानी जिन्दगी और एक लामहदूद (असीमित संसार) दुन्या की ज़रूरत है जिसे आख़िरत कहते हैं। जिसके सामने यह दुन्या की ज़िन्दगी एक बूँद के बराबर भी कोई हैसियत नहीं रखती, वहां की राहत के सामने यहाँ की राहत और वहाँ की तक़लीफ के सामने यहाँ की तकलीफ की कोई हैसियत नहीं, इसलिए इन्सान का फितरी तक़ाज़ा खुदा–ए–वाहिद की इबादत, खुदशनासी (आत्म ज्ञान) रज़ा–ए–इलाही की तलब और उसके लिए मेहनत और फिक्र व कोशिश है।

इसलिए इन्सान को किसी रुतबा, शान व शौकत, किसी ताक़त व कुव्वत और बड़ाई के सामने बड़ों की तरह झुकने और घास–फूस की तरह पामाल होने की ज़रूरत नहीं, वह सिर्फ एक बुलन्दी के सामने सबसे ज़ियादा पस्त और पस्तों के मुक़ाबले में सबसे ज़ियादा बुलन्द है। वह सारी दुन्या की ख़िदमत करने वाला और एक ज़ात का ख़ादिम है। उसके सामने फरिश्तों को सजदा करा कर उसका अल्लाह के सिवा हर एक के सजदा से मना करके साबित कर दिया कि कायनात की तमाम ताकतें जिनके फरिश्ते अमीन हैं उसके सामने सर झुकाए हुए हैं और उसका सर सिर्फ ख़ुदा के सामने झुका हुआ है।

उसके गले में महकूमी की एक बोझल ज़नजीर ज़रूर है मगर अलग अलग दिशा में खींचने वाली बहुत सी लटकी ज़न्जीरें नहीं हैं। वह माँ बाप की फरमाबरदारी करता है इसलिए कि उसके एक ही हाकिम ने उसे ऐसा करने का हुक्म दिया है। वह दोस्तों से महब्बत रखता है। क्योंकि उसको दोस्तों और साथियों के साथ सही और अच्छा बरताव करने की तलक़ीन (हुक्म) की गई है। वह अपने से बड़े हर बुजुर्ग का अदब करता है। उसको हाकिमों की भी इताअत करने (उन बातों में जो शरीअ़त के खिलाफ न हो) का हुक्म है। हक़ीक़त में इस दुन्या में हर इन्सान के लिए बहुत से हाकिम और अपने सामने

शेष पृष्ठ .....39....पर

अपना माहौल अपनी जन्नत

—मतीन अचल पुरी

यही है क़ौल अपना बोल अपना
कि जन्नत अपनी है माहौल अपना

हमें पानी को है शफ़्फ़ाफ़[1] रखना
फ़ज़ा[2] को भी निहायत साफ़ रखना

धुवें से अब हवा को है बचाना
कसाफ़त[3] से फ़ज़ा को है बचाना

शजरकारी[4] को लाज़िम[5] जानना है
अब अपने आप को पहचानना है

हरारत से बचाना है ज़मीं को
शरारत से बचाना है ज़मीं को

करें हम बेज़ानों से महब्बत
परिन्दों के ठिकानों से महब्बत

यह गोरे लोग अपने, काले अपने
यह उर्दू वाले हिन्दी वाले अपने

न झगड़ा हो कोई हमको गवारा
हमारी आरज़ू है भाई चारा

सताता है हमें दिन रात यह ग़म
न जन्नत अपनी बन जाये जहन्नम

कोई पेशा हो कोई ज़ात भाई
रहें मिल जुल के हम दिन रात भाई

यही है क़ौल अपना बोल अपना
कि जन्नत अपनी है, माहौल अपना

---

1. शफ़्फाफ़=पारदर्शी। 2.फ़ज़ा=अन्तरिक्ष। 3. कसाफ़त=मलिनता,
4. शज़र कारी=वृक्षारोपण। 5. लाज़िम=अनिवार्य।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ज़कात की रक़म अगर तिजारत में लगा दी जाए और उसकी आमदनी फुक़रा मुस्तहकीन ज़कात पर सर्फ की जाए, तो क्या शरीअ़ते इस्लामी इस की इज़ाज़त देती है? कुछ अहले ख़ैर हज़रात चाहते हैं कि ज़कात की रक़म से प्रापर्टी ख़रीद ली जाए, फिर उसे फ़रोख़्त कर के जो मुनाफा हो उन को फुकरा और मुस्तहक़ीन में सर्फ कर दिया जाए और अस्ल रक़म से फिर दूसरी ज़मीन खरीद कर उसी तरह आमदनी बढ़ाई जाए, क्या यह राय दुरुस्त है?।

उत्तरः ज़कात की रक़म को तिजारत में लगाना उससे प्रापर्टी या ज़मीन ख़रीद कर मुनाफ़ा हासिल करना दुरुस्त नहीं है, इसलिए कि ज़कात की अदाएगी के लिए यह ज़रूरी है कि उसको बिला एवज़ मुस्तहकीन के हवाले कर दिया जाए अगर ज़कात मुस्तहकीन के हवाले न की जाए, बल्कि उसे आमदनी और मुनाफ़ा का ज़रीआ बनाया जाए तो ज़कात अदा न होगी। (रद्दुल मुख़्तारः 2/3, किता—बुज़्ज़कात)

प्रश्नः ज़कात की रक़म से हॉस्पिटल चलाना ताकि गुरबा व मसाकीन का इलाज कराया जाए, क्या शरअ़न दुरुस्त है? मतलब यह है कि मुलाज़िमीन और हॉस्पिटल के स्टॉफ की तनख़्वाहों और दवा वगैरा में ज़कात की रक़म लगाई जाये तो क्या शरीअ़ते इस्लामी में इसकी इजाज़त है? क्या उस से ज़कात अदा हो जाएगी?

उत्तरः ज़कात की रक़म से हॉस्पिटल चलाना दुरुस्त नहीं है और उससे ज़कात भी अदा नहीं होगी, क्योंकि अदाए ज़कात के लिए मुस्तहक़ीन को बिला एवज़ मालिक बना देना ज़रूरी है और यह चीज़ तनख़्वाहों और दवा की सूरत में नहीं हो सकती, लिहाजा उसकी इजाज़त नहीं होगी।

(फतावा हिन्दीयाः 1/188)

प्रश्नः कुछ अहले ख़ैर हज़रात चाहते हैं कि ज़कात की रक़म से मकानात तामीर कर के गुरबा को दे दिये जाएं, क्या इस तरह मकानात की तामीर में ज़कात की रक़म इस्तेमाल करने से ज़कात अदा होगी या नहीं?

उत्तरः ज़कात की रक़म से मकानात तामीर करना दुरुस्त नहीं, ख़्वाह यह मकानात गुरबा को दे दिये जाए, क्योंकि ज़कात की अदाएगी के लिए यह शर्त है कि ज़कात के हक़दारों को बिला शर्त एवज़ मालिक बना दिया जाए और वह शर्त यहाँ नहीं पाई जाती है। अलबत्ता अगर ज़कात की रक़म गुरबा को दे दी जाए और वह उससे मकानात तामीर कर लें तो यह दुरुस्त है और उससे ज़कात अदा हो जाएगी।

(तहतावी अल मराक़ी अलफलाहः 1/414)

प्रश्नः कुछ मुस्लिम नव—जवानों ने एक क़र्ज़ा फण्ड क़ाइम किया है, यह लोग चाहते

शेष पृष्ठ .....29....पर

कुछ कोरोना के विषय पर

—इदारा

आज दो सितम्बर है नवम्बर की तैयारी ज़ोरों पर है हाँ दो महीना पहले तैयारी करने पर पर्चा समय पर छप पाता है इस वक़्त कोरोना की बात करनी है कोरोना जिस तेज़ी से आगे बढ़ रहा है लगता है यह हर एक से भेंट कर के रहेगा हर दूसरे तीसरे दिन एक लाख रोगी बढ़ जाते हैं यद्यपि 77 प्रतिशत रोगी ठीक हो जाते हैं। इस समय कोरोना के कुल रोगियों की संख्या 37 लाख को पहुंच चुकी है जब कि 28 लाखा 4000 रोगी ठीक हो चुके हैं 8 लाख से अधिक रोगिरों का विभिन्न चिकित्सालयों में उपचार चल रहा है 66 हजार रोगी मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं, क्या कोरोना के ये आँकड़े भयावह नहीं हैं? निःसन्देह हैं, यद्यपि एक सौ तीस करोड़ के समक्ष ये संख्या नाम मात्र ही लगती है फिर भी बड़ी चिन्ता जनक है, किसी माध्यम से यह ज्ञात न हो सका कि एक रोगी पर जाँच से उपचार तक कितना ख़र्च आता है और तमाम रोगियों का खर्च कौन सहन करता है? ख़ुद से अनुमान बताता हूँ तो मस्तिष्क फेल होने लगता है ह्रदय बैठने लगता है परन्तु जब तक जीवन है जीवित रहना है और कोरोना से निरंतर लड़ना है, बड़े आश्चर्य की बात है जब परस्पर उचित दूरी रहती है न हाथ मिलाते हैं न गले मिलते हैं मास्क लगाते हैं भीड़ से बचते हैं सफाई रखते हैं फिर कैसे कोरोना में गिरफ़्तार हो जाते हैं अवश्य ही हम से भूल चूक हो रही है अगर ऐसा है तो अपने हाथों कुल्हाड़ी मारना हुआ, दो महीना पहले सुना था कि वैक्सीन तैयार हो रही है दो महीना पश्चात सार्वजनिक हो जाएगी परन्तु अब तक उसका कोई पता नहीं है आशा यही लगाई जाती है कि शीघ्र ही वैक्सीन सार्वजनिक हो जाएगी अल्लाह करे वैक्सीन बहुत जल्द आम हो जाए तो कोरोना के फैलाव पर रोक लग सके।

स्कूल कॉलेज़ और मदरसे अभी नहीं खुल रहे हैं यद्यपि ऑनलाइन शिक्षा जारी है परन्तु उच्च स्तर की शिक्षा ऑन लाइन हो सकती है लेकिन छोटे क्लासों और विभिन्न विषयों की शिक्षा सरल नहीं है, अल्लाह करे हालात बदलें स्कूल कॉलेज और मदरसे खुलें और शिक्षा के क्षेत्र में जो हानि हुई है उसकी पूर्ति हो सके।

◆◇◆

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

सिर्फ़ माल व हैसियत और ख़ूबसूरती की वजह से शादी करना नापसंदीदाः—

नबी—ए—अकरम (स०) ने दीनदारी को प्राथमिकता वाला गुण बताने के साथ कुछ दूसरी चीज़ों की बुराइयां भी बयां की हैं, जैसे फरमाया :—

''सिर्फ़ ख़ूबसूरती की वजह से किसी औरत से शादी न करना, क्योंकि हो सकता है ख़ूबसूरती उसके लिये तबाही और बिगाड़ का जरिया बन जाए, माल व दौलत की वजह से न करना क्यों की माल से आमतौर पर विद्रोह आ जाता है (क्योंकि मालदार बीवी गरीब पति की बात मानने के बजाए अक्सर उसे अपना नौकर समझने लग जाती है) बस दीनदारी के आधार पर शादी करो।''

(इब्ने माजह पृष्ठः153)

एक और हदीस में दूसरे अंदाज में माल व हैसियत के नुकसान बयान किये गए हैं। ''जो व्यक्ति इज्जत हासिल करने के लिए किसी औरत से शादी करेगा उसकी ज़िल्लत में इज़ाफा होगा, जो सिर्फ़ माल की वजह से शादी करेगा उसकी ग़रीबी में इज़ाफ़ा होगा, और जो ख़ानदानी शराफ़त की वजह से किसी औरत से शादी करेगा (और मकसद यह हो कि उसे भी लोग शरीफ़ समझने लग जाएंगे) उसकी इज़्जत बढ़ेगी नहीं बल्कि घटेगी, हाँ जिस व्यक्ति का शादी करने का मक़सद यह हो कि उसकी जिन्दगी पाकीज़ा हो जाए या वह रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार कर सके, तो ऐसी शादी उन दोनों के लिए ख़ैरोबरकत का ज़रिया होगी।'' (तबरानी)

इन निर्देशों के साथ हुज़ूर (स०) ने एक बहुत ही विचारणीय और हर समझदार आदमी को चौंका देने वाली यह जानकारी भी दी है :—

''जब किसी ऐसे व्यक्ति की ओर से पैग़ाम आजाये जिसके चरित्र और दीन से तुम संतुष्ट हो तो (तुरंत) शादी कर दो वरना जमीन के अंदर बहुत बड़ा फितना फ़साद बरपा होगा''।

(तिर्मिज़ी जिल्द 1,पृष्ठ 148)

इन तमाम निर्देशों ख़ासतौर से आखिरी निर्देश की पाबन्दी करने और उस पर अमल करने का नतीजा दुन्या में भी सुहानी और संतुष्टि की ज़िन्दगी मयस्सर आने के रूप में जाहिर होगा क्योंकि औरत व मर्द (ख़ासतौर से) की जिन ख़ूबियों की बिना पर शादी करना पसंदीदा क़रार दिया गया है उन का यह प्राकृतिक परिणाम होगा, इस के अलावा निष्पक्ष रूप से विचार विमर्श के बाद यह हक़ीक़त सामने आएगी कि जिन ख़ूबियों को इस बारे में ज़रूरी क़रार दिया गया, उन से ज़ियादा बेहतर सिफ़ात (गुणों) का पता चलाने में मानव बुद्धि मुश्किल से ही कामयाब हो सकेगी और मालो दौलत वालों के पैग़ाम की उम्मीद में लड़कियों की शादी न करने से जो फ़साद फैल सकते हैं या फ़ैलते हैं उनका इंकार आज किसी जानकार आदमी के लिए मुमकिन ही नहीं रहा।

''कुफ़्व'' (बराबरी) की हक़ीक़त और मस्लहतः—

ऊपर की लाइनों में अनेक बार यह बात आ चुकी है कि शादी का मक़सद यौनेच्छा पूरी करने के साथ साथ अल्लाह के इरादों को

ज़ाहिर करना भी है, यह मक़सद उसी वक़्त हासिल हो सकता है जब दोनों के मिज़ाज में एकरूपता और प्रवृत्ति में समानता हो, वरना दोनों की ज़िन्दगी ख़ासतौर पर औरत की जिन्दगी (क्योंकि उसकी भावनाएं ज़ियादा कोमल होती हैं, बर्दाश्त व मुक़ाबला करने की ताक़त उसमें कम होती है, और अलग हो जाने का अधिकार उसे नहीं होता) बहुत ही कड़वी बल्कि नरक का नमूना बन जाती है, अतः प्राकृतिक धर्म इस्लाम में जिस तरह तमाम प्राकृतिक आकांक्षाओं का लेहाज़ किया गया है, इस पहलू को भी नज़रअंदाज नहीं किया गया, इसी लेहाज़ का शरई नाम ''कुफ़्वू'' का एतिबार है, इस हक़ीक़त को तस्लीम करने से कोई भी समझदार आदमी इंकार नहीं कर सकता कि रहन–सहन के फ़र्क से मिज़ाज और आदतों में आमतौर पर भिन्नता पैदा हो जाती है, एक ख़ास माहौल में पली हुई और विशेष अंदाज पर ज़िन्दगी गुज़ारने वाली लड़की जब उससे बिलकुल अलग माहौल में ब्याह दी जाएगी तो उसकी कोमल भावनाओं और दिल दिमाग़ पर जो कुछ भी गुज़रे कम है समझदार के लिए समझना मुश्किल नहीं, मिसाल के तौर पर पढ़े लिखे परिवार, शालीन और सभ्य ख़ानदान की लड़की की शादी अगर ऐसे व्यक्ति से कर दी जाए जिसका ख़ानदानी पेशा आँतों की चर्बी निकलना और उसे साफ़ करना या इसी तरह का कोई और काम हो, जिससे पूरा मकान और उस व्यक्ति के कपड़े यहाँ तक कि उसका बदन भी बदबूदार, दुर्गन्धित रहता हो, तो सोचिये उस लड़की के दिलो दिमाग़ पर उस माहौल का क्या असर होगा, क्या उसकी ज़िन्दगी सुहानी रह सकेगी? उसका स्वास्थ्य बर्बाद न होगा? और शादी के मक़सद का हासिल होना खुशी–खुशी संभव होगा? जिस शरीयत की नज़र में इस क़िस्म के पेशावरों का जमाअत से नमाज़ के लिए मस्जिद जाना भी अच्छा न माना जाता हो कि उनके जाने से थोड़ी देर दूसरे लोगों को तकलीफ़ पहुंचेगी, तो क्या वही शरीयत स्थायी रूप से किसी की तकलीफ़ बर्दाश्त कर सकती है? अगर तनहा यह व्यक्ति ऐसा पेशा छोड़ भी दे तो भी उसके सगे–सम्बन्धियों में उस पेशे का रिवाज उस लड़की के लिए कलह बल्कि तकलीफ़ का कारण बना रहेगा, खानदानी मिज़ाज और पेशे के असर से आदतों पर प्रभाव एक प्राकृतिक चीज है। जिसका समर्थन अनुभव व अवलोकन से भी होता है इस बात का अहम प्रमाण नबी–ए–अकरम (स०) के कुछ इरशाद हैं जैसे एक अवसर पर आप (स०) ने फ़रमाया ''लोग खानों की तरह होते हैं जैसे सोने और चांदी की की खानें होती हैं।

(बुखारी जिल्दः 1,पृष्ठ 496)

और एक जगह यह फ़रमाया, कुरैश की औरतों की तारीफ करते हुए :–''वे बच्चे पर बड़ी मेहरबान होती हैं।''

बस दर असल यही मस्लहत है ''कुफ़्वु'' की रिआयत और उसके लेहाज़ करने, और ''गैर कुफ़्वु'' में शादी के प्रोत्साहन ना करने, बल्कि ऐसी ना मुनासिब जगह शादी हो जाने के बाद कुछ विशेष शर्तों के साथ फस्खे निकाह (निकाह तोड़ देने) तक का अधिकार दे देने की, इसी मस्लहत से मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम के दरम्यान भी शादी से मना किया गया, क्यों कि मूर्ति

पूजक और तौहीद को मानने वाले के अंदाज़ और उसके फलस्वरूप मिजाज और रहन–सहन के दरम्यान ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ होता है, या होना चाहिए (शायद इसी वजह से कुछ फ़िक़्ह के महारथियों के यहां दीनदार औरत की शादी फ़ासिक़ व फाजिर (गुनहगार) मर्द से मना है) लेकिन मुसलमान और अहले किताब (ईसाई व यहूदी) में यह फ़र्क़ ज़रा कम हो जात है, इसलिए उनके हुक्म में फ़र्क़ है, कि अहले किताब (बशर्ते कि सही माने में अहले किताब हों) की औरत से मुसलमान मर्द की शादी अगरचे पसन्दीदा तो नहीं, मगर सही समझी गयी, मगर मुसलमान औरत की शादी अहले किताब मर्द की शादी सही नहीं समझी गयी, क्यों कि इससे मुसलमान के पराजित और गैर मुस्लिम (अहले किताब) के जीत होने का शक होता है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर .....

हैं कि उस फण्ड में ज़कात की रक़म जमा की जाए और उससे गरीबों और मुहताजों को क़र्ज़ दिया जाए तो क्या यह तरीक़–ए–कार दुरुस्त है, क्या उस फण्ड में ज़कात की रक़म जमा करने से ज़कात अदा हो जाएगी?

उत्तर: ज़कात की रक़म से इस तरह का क़र्ज़ा फण्ड क़ाइम करना दुरुस्त नहीं है और उसमें रक़म जमा करने से ज़कात अदा न होगी, क्योंकि क़र्ज़ा की रक़म वापस करना ज़रूरी है, जबकि ज़क़ात को उसका मालिक बना दिया जाए और वह रक़म वापस न ली जाए।

(रद्दुल मुख़्तारः 3/2)

प्रश्न: एक शख़्स मुस्तहक है, इसको ज़कात देने वाला किसी मस्लहत से क़र्ज़ की रक़म कह कर ज़कात दे और नीयत भी ज़कात की है न कि रक़म वापस लेने की, तो क्या ज़कात अदा हुई या नहीं?

उत्तर: देने वाले ने जब ज़कात की नीयत से रक़म दी है और लेने का इरादा नहीं है तो ज़कात अदा हो जाएगी, फतावा हिन्दीया में इस की सराहत मौजूद है कि अगर किसी ने मिस्कीन को बतौरे हिबा या क़र्ज़ के रक़म दी और नीयत ज़कात की कर ली तो ज़कात अदा हो जाएगी।

(फतावा हिन्दीयाः 1/171)

प्रश्न: एक ऐसा मक़रूज जो क़र्ज अदा न कर पा रहा हो और परेशान हो, ज़कात उस मक़रूज़ को देना बेहतर है या किसी गरीब को जिसे अपने खाने पीने का इंतिज़ाम करना है, दोनों मे अफ़ज़ल कौन है?।

उत्तर: मक़रूज़ को क़र्ज़ के बोझ से निजात दिलाना बेहतर है, फतावा हिन्दीया में सराहत है (फकीर के मुक़ाबला में उस शख़्स को देना बेहतर है जिस पर क़र्ज़ है) हिन्दीयाः 1/188)

प्रश्न: एक शख़्स ने ज़कात की रक़म अदा करने के लिए अलाहिदा एक जगह रख दी, सूए–इत्तिफाक वह रक़म अदाएगी से पहले ही जाये हो गई, क्या ज़कात अदा हो गई या दूसरी रक़म ज़कात में देनी होगी?

उत्तर: रक़म सिर्फ अलाहिदा कर लेने से ज़कात अदा नहीं हुई, बल्कि मुस्तहक के हवाले कर देने से अदा होती है, इसलिए दोबारा रक़म देनी होगी।

(फतावा हिन्दीयाः 1/171)

❖❖❖

सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद

—इदारा

उर्दू अच्छी तरह पढ़ाएं
फिर उर्दू लिखना सिखलाएं
लिखने के वह गुण बतलाएं
वह हमसे इमला लिखवाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
गिनती अच्छी तरह पढ़ाएं
जोड़ घटाओ करना सिखलाएं
जोड़ घटाओ की मश्क़ कराएं
जोड़ घटाव के गुण सिखलाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
बच्चों को फिर खड़ा करें
बच्चों से मिन्टल पूछें
मिन्टल की वह मश्क़ कराएं
बच्चों का यूं जहन बढ़ाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
इक बच्चे को खड़ा करें
चारों समतें वह यूँ बतलाएं
सूरज निकलने की जानिब
बच्चे का वह मुँह करवाएं
आगे पूरब है बतलाएं
पीछे पश्चिम है बतलाएं
दाहने हाथ दक्खिन है बतलाएं
और बाएं उत्तर बतलाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद

बच्चों से पीटी करवाएं
तरह तरह के खेल खिलाएं
साथ साथ रहना सिखलाएं
वर्जिश का वह नफ़ा बताएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
खूब पहाड़ा याद कराएं
ज़र्ब और तक़सीम सिखाएं
ज़र्ब की वह फिर मशक़ कराएं
तक़सीमों की मशक़ कराएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
डाक घर थाना बतलाएं
परगना तहसील बताएं
हर शहरी का हक़ बतलाएं
हुब्बे वतन का सबक पढ़ाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
अदब बड़ों का करना सिखाएं
छोटों पर शफ़क़त करवाएं
माँ की ख़िदमत बाप की ख़िदमत
बच्चों को करना बतलाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद
मुस्लिम बच्चों को समझाएं
नमाज़ पढ़ो उनको बतलाएं
कोताही पर डाँट पिलाएं
बच्चों को यूं राह पे लाएं
सन चालीस के इक उस्ताद आज तलक है उनकी याद

❖❖❖

नोटः यह अंग्रज़ी दौर के सरकारी प्राइमरी स्कूल के उस्ताद थे। सन चालीस यानी 1940 ई0।

एक मौलवी साहब

—माइल खैराबादी

"जेल में मुझे कुछ ही दिन बीते थे कि हमारी जेल में एक ऐसे नेक आदमी को बन्दी बना कर लाया गया कि हम सब हक्का बक्का रह गये। वे नेक बुज़ुर्ग बन्दी लगते नहीं थे। बड़ी प्यारी दाढ़ी थी उनकी, ऐनक लगाये हुए थे। पायजामा और कुर्ता पहने हुए थे। उनके वस्त्र कैदियों वाले थे ही नहीं। माथे पर सजदे का निशान चमक रहा था। उन्हें ला कर सलाखों वाली कोठरी में बन्द कर दिया गया। हम सब हैरान थे कि ये कैसे कैदी हैं। हमें तो काम करना पड़ता है लेकिन उन्हें नहीं, उनकी निगरानी हम सबसे अधिक होती है।"

"मेरा जी चाहा करता था कि इनसे भेंट हो तो पूछूँ कि मौलवी साहब आपने क्या अपराध किया कि जेल लाये गये। यहाँ तो चोर, उचक्के, डाकू, बदमाश लोग रखे जाते हैं।"

"इस तरह पूछने को दिल तो चाहता था लेकिन मुझे एक दिन भी अवसर नहीं मिला। मैं रोज़ देखा करता था कि वे सवेरे उठते, वुज़ु कर के नमाज़ पढ़ते, फिर कुर्आन पढ़ते थे। फिर कुछ देर तक लिखते पढ़ते थे। दोपहर तक वे इसी तरह काम करते थे।"

"तो सचमुच वे मौलवी साहब ही होंगे?"

"तो बाबा कौन साहब थे वे।"

"बताता हूँ, अच्छा तो वे दोपहर को खाना खा कर थोड़ी देर लेटते, फिर ज़ुहर के समय उठे। ज़ुहर की नमाज़ पढ़ते। इसके बाद फिर लिखने पढ़ने में लग जाते। अस्र के वक़्त तक काम करते। अस्र पढ़ कर टहलते, लेकिन अपनी सलाखों के अन्दर ही, वहाँ से निकलने की उन्हें इजाज़त न थी।"

"अरे तो उन मौलवी साहब ने क्या किया था।"

"बताता हूँ। फिर कोई आठ दस दिन में एक और कमरे में ले जाये गये। मुझे भी उनके कमरे में कर दिया गया। अब मेरी ड्यूटी चक्की पीसना नहीं थी। अब मेरी ड्यूटी यह थी कि इन मौलवी साहब का काम काज करूँ। मुझे अब और अधिक आश्चर्य हुआ कि वे कैसे क़ैदी हैं कि इनकी सेवा के लिए एक नौकर दिया गया।"

"तो बाबा आपने उनसे पूछा भी या नहीं।?"

"पूछ तो लिया, एक दिन मैंने पूछ ही लिया कि मौलवी साहब आपने क्या किया था कि आपको जेल में बन्द कर दिया गया। फिर आपसे क़ैदियों की तरह काम नहीं लिया जाता ऐसा लगता है कि आपको यहाँ ला कर बन्द कर दिया गया है और बस।"

"मैंने इस तरह कहा तो बोले, "भाई मैंने कोई बुरा काम नहीं किया। न चोरी की, न डाका डाला, न किसी से लड़ा, न किसी का पैसा मारा, मुझे सरकार ने बिना अपराध के ही बन्द कर दिया और मुझे भी नहीं बताया गया कि मुझे किस अपराध में बन्द किया गया है?"

"अरे बाबा बेख़ता ही" हम सब एकदम बोल उठे। बाबा ने कहा कि जब

मैंने मोलवी साहब से सुना तो इसी तरह ''अरे'' मेरे मुँह से भी निकला था।

''तो बाबा कोई बात होगी ज़रूर?''

''हाँ, बाद में मौलवी साहब ने ही बताया कि सरकार ने एक क़ानून ऐसा भी बनाया है कि कुछ दिनों के लिए सरकार जिसको चाहे बन्द कर दे। ऐसे क़ैदी राजनैतिक कैदी कहलाते हैं।''

''राजनैतिक कैदी का क्या अर्थ है?'' मैंने पूछा।

''भाई मौलवी साहब ने ही मुझे बताया कि राजनैतिक कैदी उन लोगों को कहते हैं जिससे सरकार को यह खटका होता है कि वे इस सरकार के बदले दूसरी सरकार बनाना चाहते हैं।''

''तो बाबा! वे मौलवी साहब ऐसे ही होगें?''

''हाँ मियाँ! वे ऐसे ही थे, मगर सुनो! मौलवी साहब कहते थे कि यह दुन्या और इसमें जो कुछ है सब अल्लाह का बनाया हुआ है, वही अल्लाह इस दुन्या का मालिक है। उसी मालिक का इस दुन्या में क़ानून चलना चाहिए। अल्लाह के क़ानून के सिवाय सारे क़ानून ग़लत हैं। हमने ऐसी कोई बात नहीं की जिससे कोई उधम मचे या गड़बड़ हो। हम दूसरों से भी यही चाहते हैं कि अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करो क्योंकि तुम सब अल्लाह के बन्दे हो। सरकार भी ऐसी बननी चाहिए जो अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार काम करे।''

''तो बाबा! इसमें क्या बात है। बात तो यही ठीक है जो मौलवी साहब ने कही।''

''हाँ बात तो यही ठीक है, मगर जो लोग यह नहीं मानते उनको बुरा लगता है और वे ऐसे लोगों को सताते हैं और उन्हें ऐसी बात कहने और करने से रोकते हैं।''

''अरे बाबा ज़रा सुनिये तो, प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी तो इसीलिए सताया गया था।''

''हाँ बेटा! यही जुर्म मौलवी साहब का भी था।''

''फिर मौलवी साहब कितने दिन जेल में रहे?''

''उफ़.....फोह।''

''उफ़ कह कर बाबा किसी सोच में पड़ गये और बोले, ''मैं मौलवी साहब का सारा काम काज करता, उनके लिए पानी लाता, चाय बनाता और पिलाता, खाना पका कर उन्हें खिलाता.....''

''और सुनिये तो बाबा!'' पप्पो बी ने कहा, ''क्या मौलवी साहब का खाना सब कैदियों से अलग पकता था?''

''हाँ बेटी!'' बाबा ने बताया और फिर बोले–

''इन मौलवी साहब के सारे काम और सारी आवश्यकतायें दूसरे क़ैदियों से अलग थीं। मेरे सिवा किसी और क़ैदी को इज़ाजत नहीं थी कि मौलवी साहब से मिले। और मैं भी बस उसी वक़्त जब कि हम क़ैदियों को काम करना पड़ता। इसके बाद हम अलग अपनी कोठरी में बन्द कर दिये जाते और मौलवी साहब अपनी जगह।''

''अच्छा तो यह तुम सबको मालूम हो चुका था कि मौलवी साहब बहुत बड़े आदमी थे, बड़े आदमी का मतलब यह है कि चाहे वे बड़े पैसे वाले न हों, लेकिन वे बड़े लीडर ज़रूर थे।''

''लीडर किसे कहते हैं बाबा!'' शौकत ने पूछा।

''बाबा ने बताया, ''लीडर

उस व्यक्ति को कहते हैं जिसके कहने पर लोग चलें। तो भाई! मौलवी साहब के कहने पर बहुत से लोग होंगे। और उन सबकी भारी जमाअत होगी। इसलिए तो उस वक़्त की सरकार उन से डर रही होगी, कहीं ये सब मिल कर सरकार ही न बदल दें और तुम जानो, मौलवी साहब में अल्लाह ने ऐसी योग्यता भर दी थी वे इस योग्य थे कि उनको लीडर माना जाता।''

''यह आपने कैसे जाना?'' मैंने पूछा।

''यह मैंने इस तरह जाना'', बाबा ने जवाब दिया, ''मौलवी साहब को घमण्ड बिल्कुल न था, मुझ को देखो मैं डाकू था और मौलवी साहब अल्लाह वाले आदमी, नमाज़ रोज़ा अदा करने वाले, कुर्आन पढ़ने वाले अच्छी बातें बताने वाले। मेरे और उनके दर्जे में आकाश पाताल का अन्तर था। मगर देखो तो जब मैं खाना पका कर मौलवी साहब के लिए ले कर आता तो मुझे साथ बैठा लेते और साथ ही खाना खिलाते। मैंने पहले पहल मना किया तो बोलेः

''तुम तो मुसलमान हो ना?''

मैंने जवाब दिया, ''जी हाँ, मैं मुसलमान हूँ।

''तो फिर साथ खाओ मेरे, मैं भी तो मुसलमान हूँ।''

मौलवी साहब के यह कहने पर मैंने कहा, ''साहब मुसलमान मुसलमान में अन्तर होता है, कहाँ आप कहाँ मैं, आप अल्लाह के वली और मैं नापाक, गन्दा और चोर बदमाश, मेरी आपकी बराबरी ही क्या।''

मौलवी साहब के सामने जिस वक़्त मैं यह कह रहा था, उस वक़्त पहले पहले मेरे मन में यह खटक पैदा हुई कि चोरी करना और डकैती करना बुरी बात है, नहीं तो इससे पहले मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया था। अच्छा जब मैंने मौलवी साहब से यह कहा तो वे बोले, ''तो चोरी डकैती से तौबा कर लो, अल्लाह तो बड़ा मेहरबान है, तम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा, फिर तुम नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, सच बोलो, किसी की चीज़ बे पूछे न लो, अल्लाह की मर्ज़ी के सारे काम करो, तुम भी अल्लाह वाले बन जाओ।''

यह सुन कर मेरा जी चाहा कि मैं भी अल्लाह की मर्ज़ी के काम करने लगूं। अच्छे बुरे काम सभी जानते हैं। लेकिन मैंने कहा, ''मौलवी साहब! मैं न पढ़ा न लिखा, अलिफ़ के नाम लठ भी नहीं जानता, मैं क्या जानूँ अल्लाह की मर्ज़ी क्या है?''

मेरी इस बात का जवाब मौलवी साहब ने यह दिया कि अच्छा आओ साथ खाना खाओ, अब मैं तुम को पढ़ाना शुरु कर दूँगा और रोज़ाना अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की बातें बताया करूँगा।

यह कह कर मौलवी साहब ने हाथ पकड़ कर बैठा लिया। मुझे दिल ही दिल में बड़ी खुशी हुई, लेकिन मैं मौलवी साहब के लिहाज के मारे अच्छी तरह खा नहीं रहा था। मैं सोच रहा था कि दुन्या में ऐसे भी भले लोग हैं जो बुरे लोगों से महब्बत करते हैं और चाहते हैं कि बुरे लोग अच्छे बन जायें। मौलवी साहब के साथ खाना तो मैंने कुछ यूँ

ही सा खाया लेकिन मैं प्रसन्न हो गया। मेरे मन ने मुझ से कहा, ''ऐसे बुज़ुर्ग के साथ खाना खाया है तो अब चाहिए कि उन्हीं जैसा बन जा और तौबा कर ले बुरे कामों से।'' और भई, सच पूछो तो मैंने दिल ही दिल तौबा कर ली लेकिन मौलवी साहब से अभी कुछ न कहा।

दूसरे दिन चाय बना कर पेश की तो चाय भी साथ पिलाई। इसके बाद मौलवी साहब के घर से कोई चीज़ आती तो वे मुझे ज़्यादा खिलाते पिलाते, स्वयं थोड़ी सी खाते। उन्हें खाने पीने की लालच थी ही नहीं। वे तो बस अधिकतर लिखते पढ़ते रहते थे, या फिर जो मेहनत करते वह यह थी कि मुझे पढ़ाते थे।

मैं समझता था कि मैं अब उस उम्र का हो गया हूँ कि क्या पढ़ सकूँगा।

''क्या उम्र थी उस वक़्त आपकी बाबा?'' हम कई लड़कों ने एक साथ प्रश्न किया।

''होगी कोई पैंतीस साल की'' और फिर कहने लगे, ''मगर भाई मौलवी साहब के पढ़ाने की रीति ऐसी थी कि मैं क्या बताऊँ, बातों बातों में पढ़ा देते और खिलना सिखा देते। कहते, ''अरे! क्या तुम सीधी खड़ी लकीर नहीं बना सकते?'' मैं जवाब देता, ''क्यों नहीं बना सकता।'' फरमाते, ''अच्छा तो बनाओ।'' मैं यूँ बताता । (मैंने ज़मीन पर बना कर दिखाया) तो मौलवी साहब बताते कि यही तो ''अलिफ़'' है। इसके बाद कहते, ''अच्छा पड़ी लकीर बनाओ।'' मैं यूं बना देता, मौलवी साहब कहते कि अच्छा अब इसके नीचे एक नुक़्ता लगाओ–। फिर बताते कि ऐसी पड़ी लकीर के नीचे एक नुक़्ता लगाओ तो 'बे' तीन नुक़्ते लगाओ तो 'पे' और ऊपर दो नुक़्ते लगाओ तो 'ते'। बस इसी तरह एक सप्ताह में सारे अक्षरों की पहचान करवा दी और मुझसे कह दिया कि ज़मीन पर बना कर अच्छी तर अभ्यास कर लो।

मेरा भी दिल लग गया। मैं ख़ूब अभ्यास करता। अब जो मेरी रुचि बढ़ी और मैंने पढ़ने में दिल लगाना शुरु किया तो रोज़ ऐसा होता कि मुझ से कहते कि अच्छा तुम सबक़ याद करो, चाय मैं स्वयं बना लूंगा। या फिर खाना बनाने में मदद करते और वही खाना जो मैं डेढ़ दो घण्टे में बनाता अब आधे घण्टे में बन जाता, इसके बाद वही पढ़ाई लिखाई शुरु हो जाती।

मेरे लिए किताब तो थी नहीं, बस ज़बानी ही मौलवी साहब ''अलिफ़, ज़बर, ज़ेर, पेश और दिल, दम आदम, अब रब, रट आदि।'' पढ़ाया करते और मैं ज़मीन को तख़्ती समझ कर उस पर अंगुली से लिखने का अभ्यास करता।

महीने भर में मौलवी साहब के घर से दो कापियां आ गईं। उनमें से एक मुझे दी और अपना क़लम दिया और कहा, ''अब इस पर खिला करो।'' तो इस तरह उन्होंने मुझे पढ़ाया लिखाया, लेकिन जितना पढ़ाया लिखाया, उससे ज़्यादा ज़बानी बताया। ज़बानी तो उन्होंने ऐसी ऐसी बातें बताईं कि कोई दूसरा मौलवी साहब क्या बताता। मौलवी साहब मुझे ज़बानी जो कुछ बताते थे वे इस्लामी अक़ीदे की बातें थीं।

यह कहते बाबा ने कूकू से पूछा, ''अच्छा मियाँ ज़रा कलमा तो सुनाओ।'' कूकू ने सुना दिया, ''ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।''

हाँ शाबाश! मौलवी साहब ने मुझसे साफ़ कलमा सुनाने को कहा तो मैं हक्का बक्का हो कर उनका मुँह तकने लगा।

''जैसे उस दिन शौकत मियाँ से मास्टर साहब ने पूछा था, ''रसूल का अर्थ?'' और शौकत मियाँ हक्का बक्का रह गये थे। यह बात सफ़्फ़ो ने मुस्करा कर कही और शौकत मियाँ झेंप गये और फिर शौकत मियां ने वही कहावत कही कि खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे, सफ़्फ़ो का पल्लू पकड़ कर जोर से खींच लिया और खींचे चले गये।

बाबा ने मना किया अरे भाई यह क्या शुरु कर दिया। सुनो तो मैं क्या कहता हूँ। अच्छा तो मैं हक्का बक्का रह गया। जब किसी ने बताया ही नहीं था तो मैं क्या बताता। सारी उम्र चोरी और डकैती में बीती थी। इसलिए तो मैं कलमा सुना न सका। तो मौलवी साहब ने बार बार बोल कर और मुझ से कहलाकर याद कराया और मैं दिन भर कलमा रटता रहा।

दूसरे दिन जब मैंने सुना दिया तो मौलवी साहब ने उसका अर्थ बताया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

फिर इबादत का अर्थ यह बताया कि हम सब अल्लाह के बन्दे हैं और वह हमारा मालिक और मौला है। हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और उसी के आदेशों के अनुसार सारे काम करना चाहिए। रसूल का अर्थ यह बताया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के आदेशों के सम्बन्ध में जिस तरह करने को बताया है और करके सिखाया और दिखाया है, उसी तरह सब काम करना चाहिए।

ये बातें मेरे दिल में उतर गईं और मैंने मौलवी साहब से कहा, ''अब मैं भी सब काम उसी तरह करूँगा, जिस तरह प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बता गये हैं और अब मैं तौबा करता हूँ कि न चोरी करूँगा न डाका डालूँगा, न बे पूछे किसी की चीज़ लूंगा, न लड़ाई दंगा करूँगा।

मौलवी साहब मेरी इस तौबा से बहुत खुश हुए और फिर रोज़ दीन की बातें बताने लगे। कुर्आन की छोटी–छोटी सूरतें याद कराने लगे। फिर नमाज़ सिखा दी। फिर अपने साथ नमाज़ पढ़वाने लगे। जिस तरह मौलवी साहब बताते उसी तरह मैं सब काम करने लगा।

एक दिन मैं खाना खा पका रहा था। नमक नहीं था। मैंने इधर उधर देखा। एक तरफ़ नमक की बोरी रखी थी। उसमें से मुट्ठी भर नमक ले आया। उसी समय मौलवी साहब ने टोका, ''यह नमक क्यों लाये?'' किस से पूछा? बुरी बात है।'' और फिर नमक वहीं रखवा दिया और उस दिन बे नमक ही खाना खाया। मैं दंग रह गया।

मौलवी साहब के पास रहते रहते मेरी बुरी बातें छूट गईं और मैंने अच्छी

बातें सीख लीं। अब जेलर मुझसे बड़ा खुश रहने लगा। इसके बाद मालूम हुआ कि उसने मेरे लिए सरकार को बहुत अच्छी रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट का असर यह हुआ कि मेरी सज़ा में कमी हो गई और थोड़े ही दिन बाद मैं जेल से बाहर कर दिया गया।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

दज्जाल का अल्लाह के यहाँ अपमानः-

हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ि0 से रिवायत है कि दज्जाल के बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जितना प्रश्न मैंने किया है किसी ने न किया होगा, और आप सल्ल0 ने मुझ से फरमा दिया था कि वह तुम को नुक़सान न पहुँचायेगा। मैने कहा कि लोग कहते हैं कि उसके साथ रोटियों का पहाड़ और पानी की नहर होगी, आप सल्ल0 ने फरमाया वह अल्लाह के नजदीक इसके लायक़ नहीं कि उसको यह क़ुदरत हासिल हो।

(बुखारी–मुस्लिम)

दज्जाल की अलामतः-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया हर नबी ने अपनी उम्मत को इस काने दज्जाल से डराया है, सुन लो यक़ीनी (तौर पर) वह काना है और तुम्हारा परवरदिगार काना नहीं है, और उसकी दोनों आँखों के मध्य काफ0 फ0र0 लिखा होगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया मैं तुम को दज्जाल की ऐसी अलामत बताऊँगा जो किसी नबी ने अपनी उम्मत को न बताई हो, वह यह कि दज्जाल काना है और उसके साथ एक बाग होगा जिस को वह जन्नत कहेगा लेकिन हक़ीक़त में वह आग होगी।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने लोगों के सामने दज्जाल का ज़िक्र फरमाया कि अल्लाह तआ़ला काना नहीं है और मसीह दज्जाल सीधी आँख का काना है गोया उसकी आँख अंगूर का दाना है जो तैर रहा है।

(बुखारी–मुस्लिम)

यहूदियों का क़त्ले आमः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जब तक मुसलमान यहूदियों से जंग न करेंगे उस वक़्त तक क़यामत न होगी, मुसलमान इस बड़ी संख्या में यहूदियों को क़त्ल करेंगे कि यहूदी पत्थर और पेड़ की आड़ में पनाह लेंगे लेकिन पत्थर और पेड़ भी बोल उठेंगे कि ऐ मुसलमान यह यहूदी मेरे पीछे छिपा है इसको आ कर क़त्ल करो मगर ''गरक़द'' का पेड़ न बोलेगा इसलिए कि वह यहूदियों का पेड़ है।

(बुखारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्रेम संदेशा

''सच्चा राही'' आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

सफाई–सुथराई

–मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

एक बुजुर्ग थे, नाम था अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह। एक व्यक्ति भेंट के लिए उनकी ड्योढ़ी पर पहुंचा। देखा कि हज़रत का चेहरा उतरा उतरा सा है। पूछा, क्या बात है? कहने लगे कि मेरी एक बिल्ली थी जो आज मर गई। काफी दिनों से उसका मेरा साथ था।

आदमी भी अजीब चीज़ है, थोड़ा किसी से दिल क्या लगाया कि जुदाई मुश्किल हो गई। लेकिन प्रेम का एक सिद्धान्त है कि उसके कारण किसी को परेशानी न हो। इस्लाम में इसकी बड़ी ताक़ीद है कि किसी को परेशान न किया जाए बल्कि इस्लाम में तो रास्ते से किसी तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देने पर पुण्य (सवाब) लिखा जाता है।

एक किस्सा मशहूर है कि एक व्यक्ति का कुत्ता मर गया। नौकर ने पूछा, साहब! इसे कहां फेकूँ? मालिक ने कहा, बाहर फेंक दो। नौकर बोला, नहीं साहब! यहाँ तो दूर तक घर ही घर हैं। मालिक बोला, अरे यार! कहीं भी डाल आओ, इतना सोचा नहीं जाता। वह नौकर उठा और मरा हुआ कुत्ता रात में पड़ोसी के दरवाज़े पर डाल आया। दूसरे दिन सुबह वही मरा कुत्ता अपने मालिक के दरवाज़े पर पड़ोसी के ज़रीये लौट आया था। नौकर ने अबकी बार वह कुत्ता अपने दूसरे पड़ोसी के दरवाज़े पर डाल दिया। मुहल्ले के बदमाश बच्चों ने देखा तो कुत्ते की लाश पर पत्थर से इतने निशाने लगाए कि लाश फट गई। अब जो पूरी गली में बदबू फैली कि पूछिये मत। परेशानी पूरे मुहल्ले वालों को हो रही थी मगर जानकर सब अनजान बने हुए थे। सभी एक दूसरे को बुरा कह रहे थे, मगर मसले के हल के लिए कोई क़दम नहीं बढ़ा रहा था।

आज के वर्तमान समाज के बहुतेरे लोगों का यही हाल है कि उनकी नियतों में खोट पैदा हो गया है। "अपना काम बनता–भाड़ में जाये जनता" जैसे तुच्छ जुमले लोगों के होंटों पर ऐसे फिर रहे हैं कि तनिक झिझक भी महसूस नहीं होती। इस्लाम में कहा गया है कि पाकी आधा ईमान है और इसी पवित्रता पर इस्लामी स्कालरों ने बहुत कुछ लिखा है।

सामाजिक जीवन में भी साफ–सफाई का बड़ा महत्व है। कुछ इलाकों के प्रति लोगों की धारणा बन गई कि अमुक क्षेत्र में गन्दगी का अम्बार है, इसलिए उस क्षेत्र के लोग मानसिक रूप से गन्दे हैं, हालांकि ये पूरा सच नहीं है बल्कि उन इलाकों के लोग सफाई पसन्द हैं मगर प्रशासन उनके साथ भेदभाव करता है या वो लापरवाह है जब उसकी शिकायतें की जाती हैं तब प्रशासन की नींद टूटती है।

ख़ैर! बात अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह रह0 की हो रही थी कि उनकी बिल्ली मर गई तो उन्होंने अपने घर में ही एक जगह गड्ढा खोदा। किसी ने पूछा कि ये क्या कर रहे हैं? कहने लगे कि इसे दफ़न करूँगा। आदमी ने कहा, अरे हटाइये, बाहर फेंकिये। कहने लगे कि नहीं इससे दूसरों को तकलीफ पहुँचेगी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे हमें रोका है, और मुसलमान एक दूसरे का शुभचिन्तक होता है न कि दूसरे को सताने वाला।

आज तो ऐसी बातें दुर्लभ हो चलीं। अब तो दूसरों को दुख देना ही कामयाबी माने जाने लगी लेकिन पहले के लोग हर किसी का खयाल व ध्यान रखने वाले थे। सच तो यह है कि वह मर के भी ज़िन्दा रहे। और आज लोग ज़िन्दा रह कर भी मुर्दों की लिस्ट में नाम लिखवा बैठे हैं।

❖❖❖

खुलासा-ए-ईमान.....

झुकाने वाली कूव्वतें मौजूद हैं जिन की तरफ़ इन्सान के सबसे बड़े दुशमन शैतान ने इन्सानों को झुकाया और अपने साथ जहन्नम में ले जाने की राह पर लगाया है। लेकिन मोमिन के लिए सिर्फ एक ही ज़ात है उसके सिवा कोई और नहीं वह सिर्फ उसी के सामने झुकता है। और सिर्फ उसी को मानता है। उसके माथे के झुकने की चौखट एक ही है। यही खुलास–ए–ईमान व इस्लाम है जिसकी हर मोमिन व मुस्लिम को कुर्आन ने तालीम दी है। फरमाया ''हुकूमत नहीं किसी की सिवाय अल्लाह के उसने फरमा दिया कि न पूजो मगर उसी को''।

(सूरः यूसुफ–40)

मोमिन का अपने रब से रिश्ता महज कानूनी और अक़्ली नहीं है। जिसका दायरा सिर्फ़ वाजिबात अदा करने और एहकाम की तालीम करने तक महदूद हो कि उसको इसका कुछ बदला मिल जाय। यह महब्बत और पाकीज़ा जज़्बात का भी रिश्ता है, यह ऐसा रिश्ता है जिस पर जौक व शौक महब्बत, दिल सोज़ी व बेक़रारी का गलबा हो और इस तरह हो कि ग़मे महब्बत के आँसूओं से दामन तर हो।

न आँखों से लगती झड़ी आँसुओं की
जो ग़म की घटा दिल पर छाई न होती।

बन्द–ए–मोमिन अपने ख़ालिक का महबूब है उसने फरमाया (मेरे लिए ज़मीन व आसमान की वुसअत भी काफी नहीं, लेकिन मैं अपने बन्द–ए–मोमिन के दिल में समा जाता हूँ)।

ख़ालिक़ की महबूबियत दिलाने वाली कुछ सिफात हैं जो बन्द–ए–मोमिन का असल सरमाया है जो उसको कुर्आन व हदीस से हासिल होती हैं कि कुर्आन व हदीस मुसलमान की ताक़त का असली सरचश्मह हैं जिनसे हर ज़माने में ताक़त व रौशनी हासिल की जा सकती है और जिनके जरिये हर ज़माने में मुसलमानों के कमज़ोर से कमज़ोर ढाँचे में रूह फूँकी जा सकती है।

❖❖❖

नींद

—इदारा

नींद भी नेअ़मत ख़ुदा की है बड़ी
गर न आये होय फिर मुश्किल खड़ी
नींद से इन्सान पाता है सुकून
नींद न आये तो आता है जुनून
घण्टे 6 तक यौमियां सोएं ज़रूर
जिस तरह हम खाना खाते हैं ज़रूर
ख़वाब अच्छे रब दिखाये नींद में
ख़वाबे बद से रब बचाए नींद में
ज़िन्दगी बरज़ख़ की होगी किस तरह
ख़वाब इशारा कर रहे हैं इस तरह
जिस्म असली सो रहा कमरे में है
जिस्म सानी ख़वाबों के नरग़े में है
रूह से जब जिस्म अव्वल छूट गया
बरज़ख़ी जिस्म उसको बरज़ख़ में मिला
बरज़ख़ी जिस्म हू बहू पहला तो है
पर नहीं बीमार वह अच्छा सा है
शुक्र उसका तुम करो जब नींद आती है तुम्हें
शुक्र रब का तुम करो जब भूख लगती है तुम्हें
खाना सोना जिसत तरह है ज़िन्दगी में लाज़मी
हुब्बे रब हुब्बे नबी हैं मोमिनों पर लाज़मी
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
उनके आल असहाब पर भी रहमतें या रब मुदाम

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख _____

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखी उर्दू के अशआर पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

موت ہر ایک کو آئے گی	मौत हर एक को आयेगी
آنا نہیں بتائے گی	आना नहीं बताये गी
لکھے وقت پر آئے گی	लिखे वक़्त पर आये गी
نا بعد نہ پہلے آئے گی	ना बाद न पहले आयेगी
رب کو اپنے بھولو نا	रब को अपने भूलो ना
دین پہ چلنا چھوڑو نا	दीन पे चलना छोड़ो ना
تا موت یہ آئے ایماں پر	ता मौत ये आये ईमां पर
دین نبی کے ایماں پر	दीने नबी के ईमां पर
نبی پہ یا رب لاکھوں سلام	नबी पे या रब लाखों सलाम
رحمت تیرے ان پہ مدام	रहमत तेरी उन पे मुदाम
رحمت ان کی آل پر	रहमत उन की आल पर
ان کے سب اصحاب پر	उनके सब असहाब पर